खण्ड-379, अंक-2
मंगलवार, 12 फाल्गुन, शक संवत् 1908
(3 मार्च, 1987 ई0)

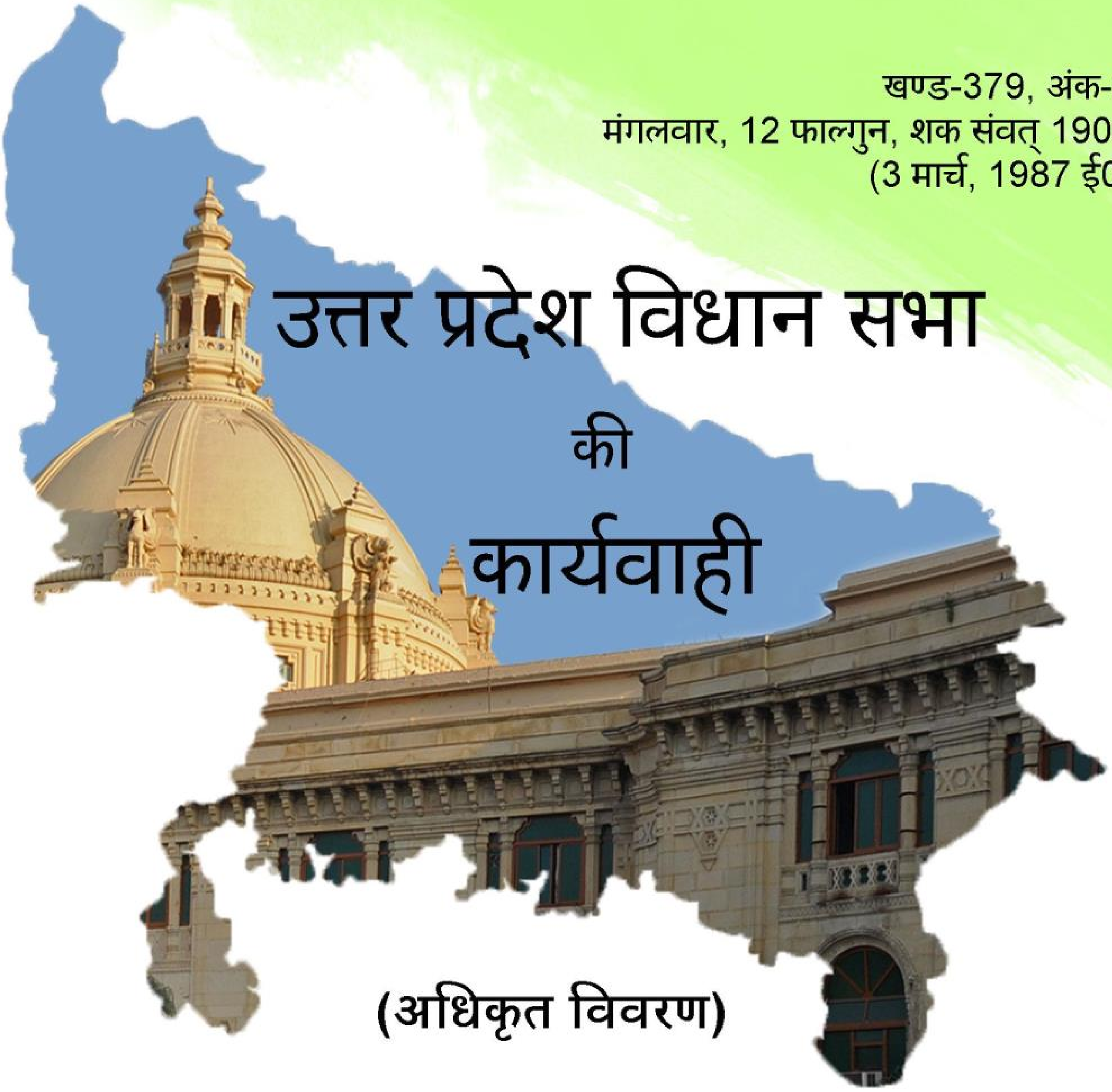

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 379 में 7 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, उत्तर प्रदेश (भारत)
1987

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 25 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 3 मार्च, 1987

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में अध्यक्ष, श्री नियाज हसन की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :-

[redacted]

अब्दुल वहीद कुरैशी, श्री — मेरठ
अरविन्द तिवारी, श्री — जालौन
अलमेलु अम्माल, कुमारी — बस्ती
अवधेश प्रसाद, श्री — फैजाबाद
अवनीश कुमार सिंह, श्री — बदायूं
अशोक स्हेरा, श्री — आगरा
इन्द्र प्रताप सिंह, श्री — बहराइच
इम्तियाज मोहम्मद खां, श्री — बुलन्दशहर
ओम प्रकाश रिछारिया, श्री — झांसी
औसान सिंह, श्री — इटावा
काजी मोहिउद्दीन, श्री — सहारनपुर
कामेश्वर उपाध्याय, श्री — देवरिया
किरन पाल सिंह, श्री — बुलन्दशहर
किशन लाल दिलेर, श्री — अलीगढ़
कुशल पाल सिंह, श्री — मथुरा
केशरी सिंह, कर्नल — बस्ती
जगवीर सिंह, श्री — अलीगढ़
जफर अली नकवी, श्री — लखनऊ
त्रिभुवन प्रसाद, श्री — बहराइच
दिवाकर विक्रम सिंह, श्री — बस्ती
धनराज यादव, श्री — बस्ती
नरेन्द्र सिंह, कुंवर — सहारनपुर
नारायण हरि शर्मा, श्री — अलीगढ़
निसार हुसैन, श्री — रामपुर
पुरुषोत्तम लाल, श्री — इलाहाबाद
प्रमोद कुमार, श्री — प्रतापगढ़
प्रवीण कुमार शर्मा, श्री — बुलन्दशहर
प्रेमीला बद्वार मेहरा, श्रीमती — बदायूं
बदन सिंह, श्री — आगरा
बलराम यादव, श्री — आजमगढ़
बेनी बाई, श्रीमती — झांसी

[redacted]

भगवान दास, श्री — मुरादाबाद
महावीर सिंह राणा, श्री — सहारनपुर
महेन्द्र सिंह भाटी, श्री — गाजियाबाद
राजीव कुमार सिंह, श्री — बाराबंकी
राजेन्द्र कुमार गुप्त, श्री — सीतापुर
राम आंतार मिश्र, श्री (उर्फ ननकू) — शाहजहांपुर
राम गोविन्द चौधरी, श्री — बलिया
राम नरेश शुक्ल, श्री — प्रतापगढ़

[redacted]

लक्ष्मी नारायण, श्री — मथुरा
विजय सिंह राणा, श्री — आगरा
विमला राकेश, श्रीमती — सहारनपुर
विलायती राम कत्याल, श्री — कानपुर
वीरेन्द्र प्रताप शाही, श्री — गोरखपुर
शैलेन्द्र कुमार, श्री — इलाहाबाद
संकठा प्रसाद शास्त्री, श्री — वाराणसी
सखावत हुसैन, श्री — गाजियाबाद
सत्यपाल सिंह, श्री — शाहजहांपुर
समरपाल सिंह, श्री — मुरादाबाद
सरदार सिंह, श्री — मथुरा

सीताराम निषाद, श्री	फैजाबाद	सैयद सईदुल हसन, श्री	बुलन्दशहर
सुग्रीव सिंह, श्री	देवरिया	हर नारायण सिंह, श्री	रायबरेली
सुरेश प्रताप सिंह गांधी, श्री	अलीगढ़	हरेन्द्र सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
सूर्य प्रताप शाही, श्री	देवरिया	हर्ष वर्धन, श्री	गोरखपुर

नोट:—श्री अम्मार रिज़वी संसदीय कार्य मंत्री, श्री अरुण कुमार सिंह सहकारिता मंत्री श्री सिब्ते रजी, शिक्षा मंत्री तथा कु0 सरस्वती अम्माल राज्य मंत्री व श्री निसार अहमद अंसारी, राज्य मंत्री भी अनुपस्थित थे ।

विधान सभा दर्शन

उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री वासुदेव सिंह तथा वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री जय राम वर्मा के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री वीर बहादुर सिंह)–

मान्यवर, बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री, श्री वासुदेव सिंह का निधन दिनांक 23 दिसम्बर, 1986 को लखनऊ के बलरामपुर अस्पताल में अपराह्न 2.50 बजे हो गया। वे लगभग 71 वर्ष के थे। श्री वासुदेव जी का जन्म दिनांक 30 नवम्बर, 1915 को जनपद प्रतापगढ़ के उतरास नामक ग्राम में हुआ था। उनकी शिक्षा प्रतापगढ़, वाराणसी एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हुई थी। वर्ष 1969 के मध्यावधि चुनाव में वे प्रथम बार संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर लक्ष्मणपुर जिला प्रतापगढ़ से उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। तदुपरान्त वर्ष 1974 में कांग्रेस एवं 1980 तथा 1985 के निर्वाचनों में भी वे कांग्रेस आई के टिकट से प्रतापगढ़ से पुनः उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। प्रोफेसर साहब वर्ष 1969 से 1974 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा के उपाध्यक्ष के पद पर रहे और 1974 में वे उत्तर विधान सभा के अध्यक्ष बने। दिनांक 25 दिसम्बर, 1980 को वे श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के मंत्रिमण्डल में मंत्री बने। तत्पश्चात् श्री श्रीपति मिश्र के मंत्रिमण्डल में खाद्य आपूर्ति और आबकारी मंत्री रहे तथा श्री नारायण दत्त तिवारी के मंत्रिमंडल में भी मंत्री रहे और उन्होंने मंत्री के रूप में इस प्रदेश की बहुत बड़ी सेवा की है। अपनी शिक्षा समाप्त करने के उपरान्त वे प्रताप बहादुर कालेज, प्रतापगढ़ में वर्ष 1943 में प्रवक्ता नियुक्त हुए थे, किन्तु 1954 में उन्होंने इस पद से त्यागपत्र दे दिया। हिन्दी के उत्थान के लिए तथा हिन्दी को अधिक सम्मानित करने के लिए उन्होंने बहुत बड़ी सेवा की है। उन्होंने उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान तथा संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष तथा रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में हिन्दी की बहुत बड़ी सेवा की है। मान्यवर, आज वे हमारे बीच में नहीं हैं। उनके निधन से उत्तर प्रदेश का एक दैदीप्यमान नक्षत्र अन्तरिक्ष में विलीन हो गया। मान्यवर, मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरा, मेरे दल की और इस सदन की सम्वेदना शोक संतप्त परिवार को भेजने का कष्ट करें।

मान्यवर, बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य एवं भूतपूर्व सांसद श्री जयराम वर्मा जी का निधन दिनांक 13 जनवरी, 1987 की रात्रि को लखनऊ के बलरामपुर अस्पताल में हो गया। वे लगभग 83 वर्ष के थे। श्री वर्मा जी का जन्म दिनांक 4 फरवरी, 1904 को जिला फैजाबाद के एक ग्राम में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से गणित में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की थी। वे 1946 में प्रथम बार उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। 1952, 1957, 1962 एवं 1967 के सामान्य निर्वाचनों में कांग्रेस के टिकट पर लगातार विधान सभा के

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

सदस्य निर्वाचित होते रहे । 1970 में भा0 क्रा0 दल के टिकट पर उपनिर्वाचन में वे पुनः निर्वाचित हुए । 1980 में कांग्रेस से लोक सभा एवं 1985 के सामान्य निर्वाचन में पुनः जिला फैजाबाद से विधान सभा के कांग्रेस दल के सदस्य बने । अपनी लम्बी राजनीतिक अवधि में वे अनेक बार विभिन्न विभागों के उपमंत्री एवं मंत्री बनाये गये । विधान सभा की लोक लेखा समिति तथा सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम समिति की सदस्य रहे । निधन के समय भी वे सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम समिति के सभापति थे । वे व्यक्तिगत सत्याग्रह एवं भारत छोड़ो आन्दोलन के अंतर्गत कई बार जेल गये । वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । उन्होंने देश की आजादी और फैजाबाद की उन्नति के लिए, वहां के लोगों को उठाने के लिए, गरीबों तथा हरिजनों को उठाने के लिए बहुत से ऐसे कार्य किये, जिससे वे उनके शुभचिन्तक बन गये । वे किसानों के बीच में हमेशा जाते थे और पिछड़े वर्ग के लोगों की उन्नति के लिए उन्होंने बहुत प्रयास किया । उनके न रहने से फैजाबाद ही नहीं, अपितु उत्तर प्रदेश ने एक वयोवृद्ध व कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया । मान्यवर, मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी, मेरे दल की और इस सदन की सम्वेदना शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

*श्री शतरुद्र प्रकाश–

मान्यवर, प्रोफेसर वासुदेव सिंह जी के संबंध में नेता सदन ने जो विचार व्यक्त किए हैं, मैं अपने दल की तरफ से उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं । प्रोफेसर वासुदेव सिंह ने अपने राजनैतिक जीवन का आरम्भ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में किया था और अन्त हिन्दी संग्राम सेनानी के रूप में किया । 23 दिसम्बर, 1986 को प्रदेश की राजधानी लखनऊ में उनका निधन हो गया । प्रो0 वासुदेव सिंह को डा0 लोहिया के राजनैतिक दर्शन से काफी प्रेरणा मिली थी उनके सभी साथी उन्हें प्रो0 साहब के नाम से पुकारा करते थे । वासुदेव सिंह जी 1969 में पहली बार संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर इस सदन के सदस्य हुए और उसके बाद मा0 उपाध्यक्ष के पद पर भी उन्होंने कार्य किया । सन् 74 में वे विधान सभा के अध्यक्ष हुए । उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने जो योगदान दिया है उसकी जितनी भी तारीफ की जाय, कम है । इस सदन की गरिमा के लिए सदस्यों की गरिमा के लिए उन्होंने अपना भरपूर योगदान किया था । इसके अलावा 1980 और 85 में भी वह विधान सभा के सदस्य चुनकर आए और मंत्रिमंडल स्तर के मंत्री बने 1980 से 1986 तक के प्रो0 वासुदेव सिंह के राजनैतिक जीवन का विश्लेषण किया जाय तो यह साफ है कि उन्होंने अपना पूरा जीवन हिन्दी के प्रति समर्पित कर दिया था । हिन्दी के लिए किसी भी प्रकार का जोखिम उठाना, किसी भी प्रकार का खतरा उठाना उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति बन गई थी ।

मुझे याद है जब 1980 में वह मंत्रिमंडल के सदस्य थे और उसी सदन के अन्दर उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का बिल आया था तो अपनी सारी सीमाओं का ध्यान न रखते हुए उन्होंने इसके खिलाफ कदम उठाया । हिन्दी को सम्मान दिलाने के लिए, उसको उसका उचित स्थान दिलाने के लिए वे जीवन के अन्तिम क्षणों तक संघर्ष करते रहे । रूस के नेता श्री गोर्बाचोव जब

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

भारत आए थे तो उन्होंने यह शिकायत की थी कि देश के प्रधान मंत्री को हिन्दी में बोलना चाहिए था । उन्होंने सारी सीमाओं को तोड़कर इस दिली भाव को प्रकट किया था । मैं समझता हूं कि हिन्दी के क्षेत्र में जो क्षति हुई है वह अपूर्णीय है । सही मायनों में प्रो0 सिंह हिन्दी पुत्र के नाम से जाने जा सकते हैं । हिन्दी को सही सम्मान दिलाने, उचित स्थान दिलाने में विभिन्न योगदानों का जब भी इतिहास लिखा जायगा तो प्रोफेसर साहब का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित होगा । देश की राजनीति में टंडन जी प्रो0 साहब के पथ-प्रदर्शक के रूप में जाने जाते हैं । टंडन जी भी विधान सभा के अध्यक्ष थे, वे भी हिन्दी के महान सपूत के नाम से प्रसिद्ध हैं इसी प्रकार प्रो0 सिंह ने हिन्दी के प्रति अपने जीवन को समर्पित कर दिया । अंग्रेजी को राजगद्दी से उतार कर हिन्दी को उस पर बैठाना ही सही मायनों में प्रो0 साहब के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

*श्री मुलायम सिंह यादव–

मा0 नेता सदन ने जो विचार व्यक्त किए हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । प्रो0 वासुदेव सिंह जी से हमारा निकट का संबंध रहा है । सोशलिस्ट पार्टी और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी में जो भी विचारधाराएं थीं उस समय मैं प्रोफेसर साहब के साथ रहता था । प्रोफेसर साहब डा0 लोहिया के निकटतम साथियों में से थे और वे कभी-कभी उनको निजी सेक्रेटर। भी कहते थे । डा0 लोहिया के समाजवादी विचारों को फैलाने के लिए लिखने-पढ़ने का सबसे अधिक काम प्रोफेसर साहब करते थे । आजादी से लेकर अंतिम समय तक वह इस देश के लिए चिन्तित थे तथा डा0 लोहिया के मन में जो सपना इस देश के लिए था, उसको पूरा करने के लिए प्रोफेसर साहब लगातार संघर्ष करते रहे। उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मैं इस बात को मानता हूं कि जब इस सदन के नेता के रूप में श्रीपति मिश्र जी यहां मुख्य मंत्री थे, उस समय भ्रष्टाचार के चारों तरफ चर्चा होती थी और चारों तरफ से एक आवाज आती थी कि इस समय मंत्रि-मंडल में एक ही मंत्री ईमानदार है और वह थे प्रोफेसर वासुदेव सिंह जिनके ऊपर कोई उंगली नहीं उठा सकता था, ईमानदारी के मामले में। इसलिए हम सब लोगों को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए । उन्होंने इस देश से अंग्रेजी हटाने के आन्दो-लन के लिए हमेशा कार्य किया और अपने देश की अन्य भाषाओं के मामले में उनका दृष्टिकोण था कि अंग्रेजी को हटाकर हिन्दी को महत्व दिया जाय । किन्तु देश की जो अन्य भाषाएं हैं वह सब आपस में बहनें हैं, यह उनका विचार था । आज ऐसे नेता के निधन से यह पूरा सदन दु:खी है । प्रोफेसर साहब अपनी सही बात कहने में चूकते नहीं थे चाहे उनके दल का मामला हो या इधर का हो। मेरा सौभाग्य था कि निधन के डेढ़ घण्टे पहले बलरामपुर अस्पताल में मैं उनका दर्शन कर आया था। ऐसे नेता के चले जाने से, आज जब हमारा देश भयानक स्थिति में फंसा है, बहुत बड़ी क्षति हुई है । मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके सभी परिवार, सह-योगी एवं मित्रों तक हमारे दल की संवेदना भेजने की कृपा करें ।

स्वर्गीय श्री जयराम वर्मा इस प्रदेश के गरीब, पिछड़े तथा किसानों के हमदर्द नेताओं में से थे और उन्होंने जीवन पर्यन्त नैतिक मूल्यों और सादगी से जीवन को जिया । वह भी हमारे प्रदेश के ईमानदार नेताओं में गिने जाते थे । आपको जानकर आश्चर्य होगा कि जिस दिन उनका निधन

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

हुआ उस दिन भी उन्होंने कमेटी के चेयरमैन के नाते कमेटी की बैठक में हिस्सा लिया। जब वह बीमारी की हालत में बलरामपुर अस्पताल गए तो अपना चरखा साथ ले गए और उन्होंने चरखा चलाया। आज यह बात सामने आई कि इतनी बार वह विधान सभा के सदस्य रहे, विभिन्न उच्च पदों पर रहे, किन्तु उनके मकान और परिवार को देख लें तो यह महसूस होगा कि उन्हें सम्पत्ति के प्रति कोई मोह नहीं था। देश की सच्ची सेवा वही कर सकता है जिसको संतान और संपत्ति का मोह न हो।

मैं उनके प्रति अपने व अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी सम्वेदना भेजने की कृपा करें।

*कुंवर रेवती रमण सिंह–

प्रोफेसर वासुदेव सिंह जी एक पुरानी कड़ी और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं एक वृद्ध योद्धा थे। उस लड़ाई में भी इन्होंने प्रारम्भिक जीवन से ही अपना योगदान दिया और प्रवक्ता के पद को त्याग कर गांधी जी की इस आजादी की लड़ाई में शामिल हुए जिसमें देश के हजारों नवजवान शामिल हुए थे। प्रोफेसर साहब के बारे में आज भी ऐसा लगता है कि हमारे बीच मौजूद हैं, मुस्कराता हुआ चेहरा उनका, पान खाते हुए लगता है आज भी वह हमारे बीच इस विधान सभा में हैं। पर आज उनके न रहने से हम सभी लोग बहुत दुःखी हैं। बल्कि राजनीतिक और सामाजिक जीवन में काम करने वाले ऐसे व्यक्तियों की दिन पर दिन कमी होती चली जा रही है, जिसकी पूर्ति आसानी से सम्भव न हो सकेगी। प्रोफेसर साहब स्पष्टवादी आदमी थे। जब भी उनको कोई बात ठीक लगती थी तो वे उसको कहने में कतई हिचकिचाते न थे उसके लिये उन्हें चाहे कितनी ही बड़ी कुर्बानी देनी पड़े, पर वह अपनी बात को कहने में हिचकिचाते न थे। प्रोफेसर साहब जब कभी अपनी कुर्सी पर बैठे होते और हम लोग भी वहां होते तो कई बार ऐसे मौके आए कि हम लोगों की उनसे झड़प भी हुई, उनको गुस्सा भी आ जाता था परन्तु फिर थोड़ी ही देर बाद फिर वह मुस्करा देते थे। इस तरह से उनके पूरे जीवन से हम लोगों को प्रेरणा मिलती है। डा0 राम मनोहर लोहिया के साथ भी वह खूब रहे, परन्तु जब वे कांग्रेस पार्टी में आए, तो यहां पर भी इन्होंने अपनी एक अलग ही पहचान बनाये रखी। एक ईमानदारी की पहचान, स्पष्ट वादिता की पहचान, शांत व सरल स्वभाव की पहचान तथा हिन्दी के प्रति अपूर्व श्रद्धा, जिसे सदन कभी भी भुला नहीं सकता। हिन्दी जगत में जहां टण्डन जी के योगदान की बात कही जायेगी वहीं पर प्रोफेसर साहब की भी बात अवश्य आयेगी, जिन्होंने इसकी सेवा के लिए मंत्री पद का त्याग दिया। इनके बारे में जो प्रेरणा और विचार थे, आज प्रोफेसर साहब हम लोगों के बीच नहीं हैं, लेकिन वह अपनी प्रेरणा और विचारों से हम लोगों को जीवन योग देते रहेंगे क्योंकि उनकी करनी और कथनी में कभी भी फर्क नजर नहीं आया जैसा कि आज के नेताओं में दिखाई देता है। यही वह कारण है कि जब हमारे प्रधान मंत्री जी रूस के एक नेता के सम्मान में अंग्रेजी में बोले थे, तब भी इन्होंने कांग्रेस में

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

रहते हुए भी यह कहा था कि जब रूस के नेता अपनी भाषा में बोल सकते हैं तो हमारे नेता को भी अपनी देश की भाषा में बोलना चाहिए था। यह एक बहुत बड़ी बात थी कि इतने बड़े नेता के प्रति इतनी बात कहना। इनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि इनके बताये हुए रास्तों पर, बताए हुए सिद्धान्तों पर, स्पष्टवादिता के रास्तों पर तथा समाजवादी रास्तों पर हम सब भी चलें। मान्यवर, इनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी ओर से तथा हमारे दल की ओर से श्रद्धांजलि भेजने की कृपा करें। मान्यवर, जयराम वर्मा जी भी आज हमारे बीच में नहीं रहे। वह भी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। एक योद्धा थे, और इतना ही नहीं, वर्मा जी में ऐसे गुण थे कि इतनी आयु होने पर भी लगातार अनेकों बार वे इस विधान सभा के सदस्य हुए, संसद के भी सदस्य चुने गये। मान्यवर, वर्मा जी ने पिछड़ी जातियों के लिये निरन्तर संघर्ष किया। सतत उनके लिये प्रयास किया। उन्होंने अपने जीवन को सादगी का प्रतीक बनाकर रखा। मंत्री होने के बाद भी वे सुख वैभव से दूर थे और निर्लिप्त भाव से उन्होंने जनता की सेवा की। आज उनके न रहने से न केवल पिछड़ी जातियों को या केवल किसी एक वर्ग को, बल्कि पूरे प्रदेश को एक ऐसे अनुभवी, कुशल और ईमानदार व्यक्ति की कमी सदैव अखरती रहेगी। मान्यवर, मैं अपनी ओर से व अपने दल की ओर से वर्मा जी के शोक संतप्त परिवार को संवेदनाएं देते हुए आपसे आग्रह करता हूं कि इनको उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री कल्यान सिंह–

मान्यवर, स्वर्गीय प्रोफेसर वासुदेव सिंह जी और स्वर्गीय जयराम वर्मा जी के निधन के सम्बन्ध में मा0 नेता सदन, मा0 नेता विरोधी दल और अन्य मा0 नेताओं ने जो संवेदनाएं व्यक्त की हैं, उनके साथ मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, प्रोफेसर वासुदेव सिंह आज हमारे बीच में नहीं हैं, इस कल्पना मात्र से बड़ा धक्का लगता है। वे इस सम्मानित सदन के अध्यक्ष के पद पर आसीन रहे और उस उत्तरदायित्व का उन्होंने बड़ी शालीनता के साथ निर्वहन किया। मंत्रि-मण्डल में रहकर उन्होंने एक अच्छे, ईमानदार और कुशल प्रशासक के नाते से परिचय दिया। देश के स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन में भी वे अगली कतार में खड़े दिखाई पड़ते थे। इस सबके बाद भी मेरी दृष्टि में सबसे बड़ी चीज, जो उनका गुण था, वह यह था कि उन्होंने हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में जो रुख अपनाया था, वह सराहनीय था। मैं यह तो नहीं मानता कि वह किसी भाषा के विरोधी थे, लेकिन मैं यह अवश्य मानता हूं कि वे हिन्दी के अनन्य पुजारी और भक्त थे और इस भाषा के प्रश्न को उन्होंने भावनाओं के साथ नहीं जोड़ा था। उन्होंने भाषा के प्रश्न को देश की आजादी और देश के लोकतंत्र के साथ जोड़ा था उन्होंने भाषा के प्रश्न को समाज की रोजी-रोटी के साथ जोड़ा था।

किसी भी देश में उसकी अपनी भाषा में राज्य न चलने से उसमें लोकतंत्र नहीं कहा जा सकता। उस देश में स्वराज नहीं कहा जा सकता। इस नाते उन्होंने सदैव जोर दिया कि शासन का काम जनता की भाषा में होना चाहिये। इसी कारण से उन्होंने सदैव हिन्दी का प्रबल समर्थन किया। वे डटे रहे, हटे नहीं। उनका यह अनु-

करणीय उदाहरण आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरणा देगा। मान्यवर, मैं समझता हूं कि यदि इस प्रदेश में, देश में अंग्रेजी के माध्यम से चलने वाली दोहरी शिक्षा पद्धति समाप्त हो जाय और इस देश और प्रदेश का शासन देश की जनता की भाषा में चलना आरम्भ हो जाय तो यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अंग्रेजी के माध्यम से चलने वाली दोहरी शिक्षा पद्धति, जिसमें गरीबों के बच्चे मजदूर 'मजूर' और अमीरों के बच्चे 'हुजूर' बनते हैं, वह समाज को दो खेमों में बांटती है। समाज में इस प्रकार का विभाजन समाज की समरसता को नष्ट करता है। यह शासक और शासित के रूप में, शोषक और शोषित के रूप में और मजूर और हुजूर के रूप में चलने वाली दोहरी शिक्षा पद्धति जिस दिन चली जायगी, मैं समझता हूं कि प्रोफेसर वासुदेव सिंह के प्रति वह ऐसा दिन होगा, जब हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे होंगे। मैं परमात्मा से इस बात की प्रार्थना करता हूं कि उनके आदर्श से प्रेरणा लेकर, हम भी दृढ़ता के साथ इस भाषा के प्रश्न पर जमें। जनता का राज्य, जनता की भाषा में हो। उन्होंने एक अनुकरणीय उदाहरण हमारे सामने रखा है। देश भक्तों की लम्बी कतारें हैं, अच्छे प्रशासक भी हो सकते हैं, कुछ मंत्री भी अच्छे हो सकते हैं। लेकिन, जब हिन्दी भाषा के विकास का प्रश्न, उनके सम्मान का प्रश्न, खड़ा होगा, तो दो ही महानुभाव इसके ज्वलंत उदाहरण होंगे, एक राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन जी और दूसरे प्रोफेसर वासुदेव सिंह। वह प्रोफेसर वासुदेव सिंह हमारे बीच में नहीं रहे इसका दुःख है।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी ओर से तथा मेरे दल की ओर से, उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदनायें भेजने की कृपा करें।

आदरणीय जयराम वर्मा जी भी हमारे बीच में नहीं रहे। वे सादा जीवन उच्च विचार की प्रतिमूर्ति थे। उत्तर प्रदेश विधान सभा की सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम समिति के सभापति के पद पर वह कार्यरत थे। मुझे उनके साथ कार्य करने का सौभाग्य मिला उस समिति में। जनता की गाढ़ी कमाई के एक-एक पैसे के प्रति कितनी पीड़ा उनमें रहती थी, यह हमें समिति की कार्यवाहियों में देखने को मिला। पिछड़ों के प्रति, दलितों के प्रति, सामाजिक दृष्टि से, शैक्षिक दृष्टि से, जिनको कोई पूछने वाला नहीं है, ऐसे लोगों के प्रति उनके मन में एक असीम दर्द था, एक पीड़ा थी और समय-समय पर वह उस पीड़ा को व्यक्त भी करते रहते थे। मुझे अच्छी तरह से याद है जब मिर्जापुर की ओबरा बिजली परियोजना के निरीक्षण के संबंध में हम लोग समिति के साथ गये थे, वहां प्रभावित किसानों से सम्बन्धित दो आवश्यक सवालों पर वह लगातार दो घंटे विचार-विमर्श करते रहे। एक, यह कि जिन किसानों की जमीन अधिग्रहीत की गयी, उनको क्षतिपूर्ति दी गयी अथवा नहीं। दूसरे, उन प्रभावित किसानों के लड़कों को नौकरी में लिया गया या नहीं। दो घंटे लगातार इस सवाल पर विचार विमर्श को देखने से यह प्रकट होता है कि

एक-एक व्यक्ति के लिए कितना दर्द था उनमें । मान्यवर, इस प्रकार के अच्छे आदर्श रखने वाले, अनुकरणीय आदर्श रखने वाले, हमारे बीच से उठते चले जा रहे हैं। यह एक ऐसी क्षति है, जो अपूर्णीय है । यह केवल किसी एक पार्टी की क्षति नहीं है। किसी एक प्रदेश की क्षति नहीं है इसे मैं मानता हूं । मैं इसे पूरे देश की क्षति मानता हूं। वर्तमान पीढ़ी की क्षति मानता हूं। माननीय जयराम वर्मा जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे यह प्रार्थना करता हूं कि मेरी ओर से तथा मेरे दल की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी शोक संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री मित्रसेन–

मान्यवर, माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और माननीय अन्य नेताओं ने स्व0 प्रोफेसर वासुदेव सिंह के सम्बन्ध में जो भाव व्यक्त किये उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, प्रो0 वासुदेव सिंह के बारे में जितना भी कहा जाय, कम है। उनके कृत्यों से हमें प्रेरणा लेनी चाहिये । विधान सभा के मा0 उपाध्यक्ष, माननीय अध्यक्ष के पदों को उन्होंने सुशोभित किया । इन पदों पर रहते हुए जो उन्होंने अपने गुरुतर उत्तरदायित्व का निर्वहन किया, वह हमारे लिये प्रेरणा का स्रोत है। वह अपने विचारों को व्यक्त करने के लिये प्रखर रहते थे। हिन्दी के विकास, उसके उत्थान के लिये वे दृढ़ संकल्प थे, हिन्दी के प्रति उनमें अटूट विश्वास था । उससे भी हमें प्रेरणा लेनी चाहिये । हमारे बीच से उठती हुई महान आत्माओं के बारे में इतना ही कहना है कि उनसे जो हमें प्रेरणा मिली है, कृत्यों से मार्गदर्शन मिला है, उन पर चलने का प्रयास करना चाहिये । प्रो0 वासुदेव सिंह आज हमारे बीच नहीं हैं, उनके उठ जाने से अपूर्णीय क्षति हुई है। निश्चित रूप से प्रतापगढ़ की जनता, जिनके वे नेता थे, निधन से दुःखी हुई होगी । मैं आपसे निवेदन करूंगा कि मेरी ओर से तथा मेरे दल की ओर से संवेदनाओं के स्वर उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें। इसी प्रकार हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मास्टर स्व0 श्री जयराम वर्मा जी आज हमारे बीच में नहीं हैं। वह बड़े ही ईमानदार और खादी के प्रति उनका अटूट प्रेम था। महात्मा गांधी जी में उनका अटूट विश्वास था। जीवन सादगी के लिये वे हम सब लोगों के लिए प्रेरणा-स्रोत हैं । वह एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने अपने और अपने परिवार के लिए कुछ नहीं कमाया एक कुटिया में रहकर उन्होंने अपने समूचे जीवन का निर्वहन किया । वह एक ऐसे तपस्वी व्यक्ति थे जिन्होंने हमेशा अपने संघर्षशील जीवन के कारण किसानों के हित की बात सोची । उनके निधन से निश्चय ही फैजाबाद को अपूर्णीय क्षति हुई है, पूरे प्रदेश को अपूर्णीय क्षति हुई है । जिन-जिन क्षेत्रों में उन्होंने कार्य किया है, वह अद्वितीय है। वह हम सब लोगों के लिए प्रेरणा-स्रोत हैं। ऐसे महान व्यक्ति के चले जाने से हमें बहुत दुःख है। मेरा कहना तो यह है कि मरते दम तक भी वह अपना चरखा अपने साथ लिये हुए थे । जीवन भर स्वयं कपड़ा कातकर कपड़े पहनते थे। आज वह हम लोगों के बीच में नहीं हैं इसलिए मान्यवर, आपसे अनुरोध है कि उनके शोक-संतप्त

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

परिवार तक मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से ये संवेदना के भाव पहुंचाने की कृपा करेंगे।

श्री कौशिक रमाशंकर–

मान्यवर, प्रोफेसर वासुदेव सिंह जी तथा श्री जयराम वर्मा जी के निधन के प्रति माननीय नेता सदन तथा अन्य नेताओं ने जो संवेदना के भाव प्रकट किये हैं मैं अपने और अपने दल को उनसे सम्बद्ध करता हूं और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। प्रोफेसर वासुदेव सिंह जी से मेरा निकट का संबंध रहा है। समाजवादी आन्दोलन के दौरान हम लोगों ने साथ-साथ कार्य किया है। उनका सादा जीवन था और वह एक ईमानदार व्यक्ति थे प्रोफेसर वासुदेव सिंह जी कालेज में अंग्रेजी भाषा के प्रवक्ता थे, लेकिन उनकी आस्था थी कि हमारे भारतवर्ष में और प्रदेश में अपनी जुबान में राज-काज चलना चाहिए। इसलिए वह हिन्दी भाषा के प्रति समर्पित थे। उसके लिये उनको भले ही कितने कष्ट सहने पड़े, उसके लिये वह तैयार थे। समाजवादी आन्दोलन के समय से ही उनकी चिन्तन शैली उनके आचरण में परिलक्षित रही। राम मनोहर लोहिया जी के नेतृत्व की छाप उनके सम्पूर्ण राजनैतिक जीवन पर हमेशा-हमेशा के लिये पड़ी रही। और वह एक प्रेरणा-स्रोत बन गये। मान्यवर, उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे निवेदन करता हूं कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी समवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें।

माननीय स्व0 श्री जय राम वर्मा जी के सादगीपूर्ण जीवन, ईमानदारी और गांधीवादी चरित्र के विषय में जितना कहा जाय वह थोड़ा है। उनके प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे निवेदन करता हूं कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी ये संवेदना के भाव भेजने की कृपा करेंगे।

श्री राज किशोर सिंह–

मान्यवर, प्रोफेसर वासुदेव सिंह हम लोगों के बीच नहीं रहे। पिछली सदन की बैठक में उनसे हम लोगों की मुलाकात हुई थी, कौन जानता था कि इस सत्र में वे हम लोगों के बीच नहीं रहेंगे और क्रूर मौत उन्हें हम लोगों के बीच से उठा ले जायेगी। वे समाजवादी विचारधारा के व्यक्ति थे और डा0 लोहिया के नेतृत्व में समाजवादी आन्दोलन में उन्होंने अपनी भूमिका निभायी थी। वे विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों से जुड़े हुए थे। हिन्दी के प्रति उनका अगाध प्रेम था। उर्दू के बारे में उनके जो विचार थे, उसके लिये उन पर कुछ बौछारें भी हुईं लेकिन वे अडिग रहे और हिन्दी का समर्थन करते रहे। आजादी की लड़ाई में भी उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी और जेल गये थे। उनके निधन से प्रदेश की अपूर्णीय क्षति हुई है। आज देश में जातिवाद, साम्प्रदायवाद और बहुत सी ऐसी शक्तियां हैं जो देश की और प्रदेश की एकता को खण्डित करने में जुटी हुई हैं। ऐसे समय में ऐसे लोगों की नितान्त आवश्यकता थी। आज उनका हमारे बीच से उठ जाना देश की और प्रदेश की एक अपूर्णीय क्षति है और जहां वे जन्मे थे वहां की जनता के लिये भी एक दुखद घटना है। नेता, विरोधी दल और नेता, सदन ने तथा विरोधी दल के अन्य नेताओं ने जो विचार और भावनायें प्रोफेसर वासुदेव सिंह के प्रति व्यक्त की हैं, उनसे अपने को सम्बद्ध करते हुए अपने और अपने दल की तरफ से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि उनके शोक संतप्त

परिवार तक इसे भेजने की कृपा करें।

माननीय जयराम वर्मा जी आज हमारे बीच नहीं रहे। कौन जानता था कि वे हमारे बीच से छीन लिये जायेंगे। जाना तो सभी को है लेकिन जब ऐसी महान विभूतियां उठ जाती हैं तो अखरता है। वह फैजाबाद के गांधी कहे जाते थे और 50 वर्षों तक राजनीति में छाये रहे। वे अपने जीवन भर गांधी जी के बताये रास्ते पर चले। अन्तिम दम तक उन्होंने चरखा काता और चरखा कातते हुए ही अपनी अन्तिम सांस छोड़ी। वे हरिजनों के व गरीबों के मसीहा थे। अपने अन्तिम समय तक उन्होंने हरिजनों की और गरीबों की सेवा करने में कोई कोताही नहीं की थी। उनके निधन से बहुत क्षति हुई है। अन्तिम समय में जब उन्हें देखा था तो आश्चर्य हो रहा था कि कैसे वे इतनी उम्र में काम करते हैं, लेकिन वे एक साहसी पुरुष थे। श्री नारायण दत्त तिवारी के मंत्रिमण्डल में जब उन्हें लिया गया था तो आश्चर्य हो रहा था कि किस तरह से इतनी उम्र के बावजूद वे नियोजन का कार्य सम्भाल पायेंगे लेकिन जितने दिन वे मंत्रिमण्डल में रहे बड़ी कर्मठता से उन्होंने अपने पद के दायित्वों का निर्वहन किया। उनके निधन से प्रदेश की राजनीति में एक बहुत बड़ा स्थान रिक्त हो गया है। मैं अपनी और अपनी पार्टी की तरफ से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि मेरी और मेरी पार्टी की तरफ से उनके परिवार को शोक संवेदना संदेश भेजने का कष्ट करें।

श्री राम नरेश यादव–

माननीय नेता, सदन और अन्य विरोधी दल के नेताओं ने स्वर्गीय प्रोफेसर वासुदेव सिंह के निधन पर और इस सदन के दूसरे वरिष्ठ सदस्य माननीय जय राम वर्मा जी के निधन पर जो अपने विचार और अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

प्रोफेसर वासुदेव सिंह जी से मेरा बहुत निकट का सम्बन्ध रहा है। समाजवादी आन्दोलन से जुड़े रहने के कारण डा0 राम मनोहर लोहिया के नेतृत्व में जिस प्रकार वे बराबर संघर्ष करते रहे, वह सराहनीय है। एक तो सबसे पहले वे कालेज में प्रवक्ता थे, वहां से छोड़ने के बाद उन्होंने राजभाषा हिन्दी के प्रखर प्रवक्ता के रूप में काम किया। इस प्रकार से उनकी जो देन रही है इस प्रदेश के लिये ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिये, मैं समझता हूं कि इतनी बड़ी देन आजादी के बाद, स्वाधीनता आन्दोलन के बाद किसी की भी नहीं रही। यदि देखा जाय तो केवल राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन ही इस क्षेत्र में दिखायी पड़ते हैं, उसके बाद प्रोफेसर वासुदेव सिंह जी ही इस क्षेत्र में नजर आते हैं। वह बड़े साहस के साथ, बड़ी निर्भीकता के साथ अपनी बात को कहते थे। उनका कहना था कि जब तक लोक भाषा के माध्यम से, राष्ट्रभाषा के माध्यम से जनता को शिक्षित नहीं किया जायेगा तब तक जनता में स्वाधीनता का भाव हम नहीं जगा सकते हैं।

मान्यवर, आज जहां आप बैठे हैं, उसी पीठ पर विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में भी वे विराजे थे। फिर मंत्रि मण्डल के सदस्य के रूप में भी वे इस सदन में बैठे। वे चाहते थे कि सारे प्रदेश का काम काज हिन्दी में हो। हिन्दी के विषय में उनकी अपनी अनूठी

छाप रही है और हिन्दी जगत में उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। मैं समझता हूं कि आने वाले दिनों में जो सबसे बड़ी आवश्यकता है अंग्रेजी को हटाने की, आज के सामाजिक जीवन से अंग्रेजी को हटाने की, वह तब तक वास्तविक रूप में स्थायी भाव से कामयाब नहीं होगी जब तक हम उनके बताये रास्ते पर नहीं चल पायेंगे।

उनका समाज के और भी क्षेत्रों में जो योगदान रहा है वह बहुत ही चिरस्मरणीय है। उन्होंने सादगी के रूप में मंत्रिमण्डल में रह कर अपने विभाग में स्वच्छ और कुशल प्रशासन देने का कार्य किया है और यह कार्य उन्होंने अपने स्तर से किया है, जो कि बहुत बड़ी चीज है। आज आवश्यकता है कि कैसे लोगों में चरित्र आये, कैसे ऐसा वातावरण आये कि समाज सुन्दर बन सके। इन सारी चीजों को ध्यान में रख कर वह इस प्रदेश की जनता के लिये प्रखर तथा प्रमुख प्रवक्ता के रूप में अपनी राष्ट्रभाषा, लोकभाषा, मातृभाषा, हिन्दी की वकालत करते थे। उनके निधन से हिन्दी जगत में एक जाज्वल्यमान नक्षत्र आज हमारे बीच से उठ गया है। मैं चाहता हूं कि हमारी शोक संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक आप भेजने की कृपा करें और मैं उनको अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री जयराम वर्मा जी के निधन से आज प्रदेश शोकाकुल है। हमारे पड़ोसी होने के नाते मेरा उनसे गहरा सम्बन्ध रहा है। वे सामाजिक कुरीतियों के सम्बन्ध में सदैव जागरूक रहे और उन्होंने इस बुराई को दूर करने के लिये "शोषित संघ" के नाम पर आन्दोलन चलाया था। सामाजिक विषमता की दीवार को ढहाने के लिये यह सारे काम किये थे। समाज के लिये उन्होंने जो किया वह उनकी अनुपम देन है समाज के लिये। महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल कर स्वाधीनता संग्राम के दिनों में, चर्खे को प्रतीक मान कर जो वे चले तो देश को स्वाधीन बनाने के बाद भी बापू के स्वप्न को साकार करने के बाद भी वे सदैव बापू के चरण-चिह्नों पर ही चलते रहे। वर्मा जी को भी चर्खे से विशेष प्रेम था। अपने पहनने के वस्त्र के लिये सूत स्वयं ही चर्खे से तैयार करते थे। ऐसा उदाहरण कम ही देखने को मिलेगा। वह इसी के द्वारा सामाजिक विषमताओं को दूर करना चाहते थे और चाहते थे कि किसी तरह स्वच्छ तथा नये समाज का निर्माण किया जा सके। मैं चाहता हूं कि मेरी भावनाओं को आप उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री देव कुमार यादव–

मान्यवर, प्रोफेसर वासुदेव सिंह और जय राम वर्मा जी जैसे व्यक्तियों के सम्बन्ध में चन्द शब्दों में उनके जीवन की महानता को वर्णित नहीं किया जा सकता है। मान्यवर, 1974 में जब मैं पहली बार इस सदन में आया तो माननीय प्रोफेसर साहब के संरक्षण में बैठकर बहुत कुछ सीखा। मान्यवर, इस सदन के उत्तेजित हो जाने पर कभी वह ऐसी बात कर देते थे, जिससे सदन का सारा तनाव हंसी में बदल जाता। उनकी जो व्यवस्थायें होती थीं, वह श्रीमन् की पीठ पर बैठने वाले हर सौभाग्यशाली व्यक्ति के लिये सदैव अनुकरणीय रहेगी। प्रोफेसर साहब राजनीतिज्ञ ही नहीं थे बल्कि उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। वह एक महान

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

विचारक थे और इतिहास के बहुत बड़े ज्ञाता थे । मान्यवर, इस सदन में उनकी अनुपस्थिति जैसा कि माननीय रेवती रमण सिंह जी ने कहा, यह आभास ही नहीं होता है कि वह इस सदन में हमारे बीच नहीं हैं । मान्यवर, हम यह कह सकते हैं कि संसदीय लोकतंत्र जब तक रहेगा और संसदीय विचारों के प्रति आस्था रहेगी, तब तक प्रोफेसर साहेब जैसे व्यक्ति मर नहीं सकते हैं, मिट नहीं सकते हैं । मेरे जनपद में, बांदा में, राष्ट्रीय रामायण मेला चल रहा था, डा0 राम मनोहर लोहिया के सपनों के अनुसार प्रतिवर्ष चित्रकूट में रामायण मेला का आयोजन किया जाता है, कल ही उसका समापन हुआ है । यह पहला अवसर था, जब चित्रकूट में प्रोफेसर वासुदेव सिंह की वहां पर अनुपस्थिति रही । इन शब्दों के साथ मेरा आपसे अनुरोध है कि न केवल उनके व्यक्तिगत परिवार के लोगों को बल्कि जिस दल को वह सुशोभित करते थे, उनको अपनी संवेदनायें पहुंचाने का आग्रह करता हूं ।

मान्यवर, इसी तरह से माननीय जयराम वर्मा जी के बारे में बहुत कुछ कहा जा चुका है । वह एक ऐसे प्रतीक थे, जो गांधी जी के विचारों के प्रति और उनके जीवन के आदर्शों के प्रति आस्था रखते थे और गांधी जी के विचारों के मूल्यों का उन्होंने अपने जीवन में बहुत हद तक अपनाया और उनका साकार किया । वह अपने जीवन भर गांधी जी के विचारों के प्रति और उनके आदर्शों के प्रति संघर्ष करते रहे । इन शब्दों के साथ मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से माननीय वर्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि मेरी शोक संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री फजलुल बारी–

अध्यक्ष महोदय, आज हमारे बीच में दो शख्सियत नहीं हैं, जिनकी कमी खल रही है और बड़ा अफसोस है । जिस प्रकार से हमारे मुल्क से इमानदारों और शरीफों की कद्र खतम हो रही है, उसी तरह से धीरे-धीरे इस प्रकार की हस्तियां भी उठती जा रही हैं जो नये आने वाले नवजवानों के लिये नमूना थी । प्रोफेसर साहेब की कमी को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है, वह आज हमारे बीच सदन में नहीं हैं । प्रोफेसर साहेब हिन्दी के प्रेमी थे । वह अंग्रेजी के दुश्मन थे और वह इसलिये कि अंग्रेजी जबान ने साम्प्रदायिकता का जहर और अलगाववाद का जहर इस मुल्क की जड़ों तक पहुंचा दिया था, इसलिये वह चाहते थे कि अपनी जबान चले । उर्दू के सिलसिले में अकसर उनके खयालात आया करते थे । एक दिन मैंने प्रोफेसर साहब से बात की थी तो उन्होंने मुस्कराकर कहा कि मुझको गलत समझा जाता है । मैं किसी जुबान का दुश्मन नहीं हूं, हां, यह जरूर है कि जो लोग दिल में कुछ और रखते हैं और जबान से कुछ और कहते हैं, मैं उसके खिलाफ हूं । दिल में जो रहे वही जबान से भी कहना चाहिए। वह इतनी साफ इन्सानियत थी और इतने साफगो इन्सान थे । ऐसे इन्सान बड़ी मुश्किल से मिलते थे । वह इस मुल्क

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

को हिन्दुस्तानी परम्परा और सभ्यता देना चाहते थे ।

जनाब जयराम वर्मा जी जिनको हम मोहब्बत से मास्टर साहब कहा करते थे, वे भी हमारे बीच में नहीं रहे । वे समझते थे कि आज देश के अन्दर तबाही हो रही है, मुल्क टूटता हुआ नजर आ रहा है । हमारे देश में सामाजिक न्याय नहीं रह गया है । इसके बगैर यह देश समता और समानता नहीं पा सकता है और इसीलिये इस मुल्क की तरक्की रुकी हुई है। मास्टर साहब यही समझते थे और इसी के लिये वे लड़ाई भी लड़ते रहे । ये अजीम शख्सियतें एक जमाना थीं और आज वह जमाना हमारी नजरों से दूर हो रहा है । हम एक अन्धेरे जमाने की ओर बढ़ रहे हैं । पता नहीं इस मुल्क की किस्मत में क्या लिखा और कल क्या होने वाला है कि ऐसी शख्सियतें टूट रही हैं । मेरी ख्वाहिश है कि इन शख्सियतों के प्रति दूसरे नेताओं ने और अन्य लोगों ने जो अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है आप न सिर्फ उनके सोमवार परिवार को ही बल्कि मुल्क के तमाम सोगवार इंसानों तक हमारी श्रद्धांजलि पहुंचा दें । इन शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धांजलि इन अजीम शख्सियतों के प्रति अर्पित करता हूं ।

*श्री काशी सिंह ऐरी–

मान्यवर, विश्वास नहीं होता है कि दो अजीम शख्सियतें प्रोफेसर वासुदेव सिंह और जयराम वर्मा जैसी प्रतिभायें हमारे बीच नहीं रहीं । बहुत अर्से तक उनके सानिध्य में रहने का मौका तो नहीं मिला लेकिन प्रोफेसर वासुदेव सिंह के बारे में कहना चाहता हूं कि इस माननीय सदन द्वारा उन्हें जो विभिन्न जिम्मेदारियां सौंपी गयीं, उनके माध्यम से इस देश की जनता के लिये उन्होंने जो सेवायें कीं, वह इतिहास में कायम रहेंगी । इतने कम समय के सानिध्य के अन्दर ही मैंने उन्हें पाया कि वह एक प्रखर व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे । उन्हें बहुत सारे लोग समाजवादी कहते थे लेकिन समाजवाद उनके अन्दर ही था । वह पैदायशी समाजवादी थे । वे हिन्दी की वकालत इसलिये किया करते थे कि हिन्दी यहां के आम आदमी की भाषा है, जिसमें आम आदमी अपनी व्यथा व्यक्त कर सकता है । यह उनके अन्दर बात थी । देश की जनता के साथ-साथ इस सदन के माननीय सदस्यों को इस बात का अफसोस है कि हमने इन दो प्रखर व्यक्तियों को अपने बीच से खो दिया । मान्यवर, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि जो भावनायें माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य माननीय नेताओं ने उनके प्रति व्यक्त की हैं, भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दें, और उनके शोक संतप्त परिवारों को मेरे और मेरे दल की ओर से श्रद्धांजलि प्रेषित कर दें ।

श्री अध्यक्ष–

प्रोफेसर वासुदेव सिंह जी और माननीय जयराम वर्मा जी हमारे बीच में नहीं नहीं रहे। हम यह सोच भी नहीं सकते थे कि इस सत्र में प्रोफेसर वासुदेव सिंह हमारे बीच में नहीं रहेंगे । मेरा तो संबंध उनसे इस कदर करीब का था कि एक ही रास्ता था जिससे हम दोनों चलते थे । तो उस रास्ते का हमारा एक साथी उठ गया है। हमारा जिला एक था वे मेरे पड़ौसी थे, कभी राय मशविरा लेना

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

होता था तो हम उनके पास चले जाते थे । उनके जो विचार होते थे वे उनको बड़ी मजबूती से रखते थे चाहे उनके नतीजे कुछ भी हों । उनके बारे में काफी कुछ कहा गया है मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं ।

जहां तक माननीय जयराम वर्मा जी का ताल्लुक है वे आखिरी दिन तक काम करते रहे । वह एक कमेटी के सभापति थे और निधन से दो दिन पहले मुझ से उसी सिलसिले में बात करने आये थे । एकायक मालूम हुआ कि वह उठ गये हैं । मैं आप सब की तरफ से इन दोनों के परिवारों तक संवेदना पहुंचा दूंगा । मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि दो मिनट मौन खड़े हो कर इन दोनों व्यक्तियों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करें ।

(सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर दो मिनट मौन खड़े हुए)

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री राज नारायण, श्री प्रभाकर सिंह, श्री प्रभाकर शुक्ल, श्री दीना नाथ पाण्डेय, श्री बृज बल्लभ सिंह, श्री राधाकृष्ण अग्रवाल, श्री विष्णु स्वरूप, श्री विष्णु शरण दुब्लिश, श्री वशिष्ठ नारायण शर्मा, श्री कमला सिंह यादव, श्री पारस नाथ सिंह, श्री राम हर्ष चौधरी, श्री जगदीश प्रसाद, श्री मोहम्मद महमूद अली खां तथा श्री राम सजीवन लाल के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री वीर बहादुर सिंह)–

मान्यवर, मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य एवं सांसद श्री राजनारायण सिंह जी का निधन दिनांक 31 दिसम्बर, 1986 को हो गया । वह लगभग 70 वर्ष के थे । स्व0 राजनारायण जी का जन्म वाराणसी के मोतीकोट नामक स्थान पर दिनांक 15 मार्च, 1917 को हुआ था । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से उन्होंने बी0 ए0 तथा एल0 एल0 बी0 की शिक्षा प्राप्त की थी । वर्ष 1952 तथा 1957 के सामान्य निर्वाचनों में क्रमशः प्रजा सोशलिस्ट एवं सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर जिला वाराणसी से उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये थे । 1966–72 और 1974-76 तक वह राज्य सभा के सदस्य रहे । वर्ष 1977 के चुनाव में वह लोक सभा के सदस्य निर्वाचित हुये । उत्तर प्रदेश विधान सभा में वह अपने दल के नेता भी रह चुके हैं ।

स्व0 श्री राजनारायण जी का राजनीतिक जीवन विद्यार्थी जीवन से ही शुरू हुआ और वह 1936 में स्टूडेंट फैडरेशन के वाराणसी जिले के अध्यक्ष निर्वाचित हुये ।

मान्यवर, स्व0 राजनारायण जी ने डा0 लोहिया के साथ समाजवादी व्यवस्था लाने के लिये कार्य किया । देश और प्रदेश की गरीब जनता और किसानों के उत्थान के लिये जो भी हो सकता था, उस पर चलने का वह प्रयास करते थे और उसके लिये जो भी रास्ता वह तय कर लेते थे उस पर निर्भीकता से चलते थे चाहे उसके कुछ भी परिणाम हों । उनका कहना था कि इस प्रदेश और देश में जब तक समाजवादी रास्ते पर नहीं चलेंगे और इन गरीबों को उठाने का काम नहीं करेंगे देश और प्रदेश प्रगति नहीं कर सकता है। आज हमने एक ऐसे कुशल राजनीतिज्ञ को खो दिया है जिससे बहुत बड़ी क्षति हमें पहुंची है। मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि हमारे दल और इस सदन की संवेदना उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मान्यवर, मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री प्रभाकर सिंह का निधन 26 अगस्त, 86 को हो गया। वह 61 वर्ष के थे। प्रभाकर जी का जन्म 4 अप्रैल, 1925 को कालाकांकर, जनपद प्रतापगढ़ में हुआ था। उन्होंने एम0ए0, एल0 टी0 एवं पी0 एच-डी0 तक की उच्च शिक्षा ग्रहण की थी।

[समय 12 बजे]

वर्ष 1974 के सामान्य निर्वाचन में स्वर्गीय प्रभाकर जी निर्वाचन क्षेत्र रामपुर खास, जिला प्रतापगढ़ से कांग्रेस के टिकट पर निर्वाचित होकर पहली बार इस सम्मानित सदन के सदस्य हुए थे।

स्व0 श्री सिंह, कुछ वर्षों तक हनुमत इण्टर कालेज, कालाकांकर के प्राचार्य रहने के बाद मदन मोहन मालवीय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, कालाकांकर, प्रतापगढ़ के वर्ष 1966 से जीवन पर्यन्त संस्थापक और प्राचार्य रहे। प्रतापगढ़ जनपद के विशेष संदर्भ में सामुदायिक विकास विषय पर उन्होंने एक शोध ग्रन्थ लिखा जिस पर उन्हें डाक्टरेट की उपाधि प्रदान की गयी। शिक्षा, अध्ययन, वाद-विवाद एवं सार्वजनिक विकास के कार्यों में उनकी विशेष रुचि थी। इस प्रकार उन्होंने प्रतापगढ़ में शिक्षा के क्षेत्र में और किसानों की जिस तरह सेवा किया है उसे भुलाया नहीं जा सकता है। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। इसलिये मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार को हमारी ओर से और इस माननीय सदन की ओर से सम्वेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री प्रभाकर शुक्ल जी का निधन दिनांक 13 मई, 1986 को हो गया। वह लगभग 86 वर्ष के थे। उनका जन्म 1900 में श्री राम बहादुर शुक्ल के परिवार में हुआ था। उन्होंने बी0 एस-सी0 तक की शिक्षा प्राप्त की थी। वर्ष 1952 के सामान्य निर्वाचन में श्री प्रभाकर शुक्ल जी कांग्रेस पार्टी के टिकट पर जिला बस्ती से विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे।

उनका राजनीति की ओर काफी झुकाव था। वर्ष 1937 में कांग्रेस पार्टी में सम्मिलित होकर उन्होंने देश सेवा का कार्य प्रारम्भ किया था। दो बार उन्होंने जेल यात्रायें भी की थीं। वह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। देश की आजादी के लिये जो उन्होंने बलिदान किया वह भूल नहीं सकते हैं। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। हम आपसे मान्यवर, अनुरोध करते हैं कि हमारे दल की ओर से और इस सदन की ओर से संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक आप पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, दुख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री दीना नाथ पाण्डेय का निधन 7 अक्टूबर, 1986 को हो गया। वह लगभग 45 वर्ष के थे। उनका जन्म दिनांक 5 जनवरी, 1942 को जिला बस्ती के एक ग्राम में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उन्होंने गोरखपुर विश्वविद्यालय से एम0 ए0, एल0 एल0 बी0 की डिग्री प्राप्त किया था। वर्ष 1980 के निर्वाचन में वह निर्वाचन क्षेत्र बासी, जिला बस्ती से कांग्रेस (आई) के टिकट पर प्रथम बार उ0 प्र0 विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे।

मान्यवर, श्री पांडेय जी काफी दिनों तक हमारे साथ रहे। विद्यार्थी जीवन में हम लोग साथ-साथ रहे। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। विद्यार्थी आन्दोलन में उन्होंने काम किया था। इसके साथ ही बस्ती जिले में उन्होंने किसानों की सेवा की और जिस तरह जनता की सेवा की उसे भुलाया नहीं जा सकता है। हम आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारी ओर से एवं माननीय सदन की ओर से संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री बृजबल्लभ सिंह का निधन 5 सितम्बर, 1986 को हो गया। वह लगभग 56 वर्ष के थे। उनका जन्म 2 जुलाई, 1930 में हुआ था। उन्होंने एम0 ए0, एल0 टी0 तक की उच्च शिक्षा ग्रहण की थी। वर्ष 1977 के सामान्य निर्वाचन में निर्वाचन क्षेत्र शाहाबाद, जिला हरदोई से निर्दलीय सदस्य के रूप में विजय प्राप्त कर उन्होंने प्रथम बार इस सम्मानित सदन में प्रवेश किया था।

श्री बृजबल्लभ जी प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय विचारधारा के व्यक्ति थे। विद्यार्थी जीवन में ही वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सम्पर्क में आये और वर्ष 1948 में शाहगंज सांय शाखा के मुख्य शिक्षक नियुक्त किये गये। वह संघ के एक निर्भीक कार्यकर्ता थे और उन्होंने संघ की शाखाओं का कुशलतापूर्वक संचालन किया। 1948 में उनको बन्दी बनाकर जौनपुर कारागार में रखा गया। सेठ बाबू राम भारतीय इण्टर कालेज पाली के वह प्रधानाचार्य भी रहे। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं, उनके न रहने से हरदोई जिले को और इस प्रदेश को क्षति पहुंची है। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारे दल की ओर से और इस सदन की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार तक संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री राधाकृष्ण अग्रवाल का निधन 14 अक्टूबर, 1986 को हो गया। वह 79 वर्ष के थे। उनका जन्म 1 अक्टूबर, 1907 को बिलग्राम, हरदोई में हुआ था। उन्होंने एम0 ए0, एल0 एल0 बी0 तक की शिक्षा ग्रहण की थी। वर्ष 1946 में प्रथम बार जिला हरदोई से कांग्रेस विधायक के रूप में उन्होंने इस सम्मानित सदन में प्रवेश किया, तदुपरान्त 1952 के सामान्य निर्वाचन में बिलग्राम, जिला हरदोई से पुनः कांग्रेस के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

मान्यवर, स्वर्गीय अग्रवाल जी प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय विचारधारा के व्यक्ति थे। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री, उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के सदस्य एवं अध्यक्ष, कानपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति तथा आर्य कन्या डिग्री कालेज, हरदोई के अध्यक्ष आदि के पदों को उन्होंने सुशोभित किया। अपने जिले में अनेकों शैक्षिक संस्थाओं की उन्होंने स्थापना की थी। वह श्री जय प्रकाश नारायण के एवं सर्वोदय विचारों के अनुयायी थे। मोतीलाल मेमोरियल सोसाइटी से भी वह सम्बद्ध रहे। व्यक्तिगत सत्याग्रह एवं भारत छोड़ो आन्दोलन के अन्तर्गत उन्होंने जेल यात्रायें भी कीं।

मान्यवर, उन्होंने देश की आजादी की लड़ाई में जो त्याग और बलिदान किया और जिस तरह से उन्होंने देश की सेवा की उसे हम भूल नहीं सकते हैं। उनके निधन से देश और प्रदेश की जो क्षति हुई है वह पूरी नहीं हो सकती। आपसे मेरा अनुरोध है कि मेरी ओर से और सदन की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार तक संवेदना भेजने का कष्ट करें।

मान्यवर, मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री विष्णु स्वरूप का निधन दिनांक 25 सितम्बर, 1986 को जयपुर–अजमेर के मध्य एक दुर्घटना में हो गया। वह लगभग 58 वर्ष के थे। श्री विष्णु स्वरूप जी का जन्म 23 फरवरी, 1929 को हुआ था। वर्ष 1967 के निर्वाचन में वह निर्दलीय सदस्य के रूप में मुजफ्फरनगर से निर्वाचित होकर उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य बने।

सामाजिक, धार्मिक और शैक्षिक कार्यों में श्री विष्णु स्वरूप जी की सदैव से रुचि रही। उनके निधन से जनपद मुजफ्फरनगर ने एक श्रेष्ठ समाजसेवी खो दिया। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि मेरी ओर से और सदन की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार तक संवेदना भेजने का कष्ट करें।

मान्यवर, दुख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री विष्णु शरण का निधन दिनांक 17 नवम्बर, 1986 को हो गया। वह 87 वर्ष के थे। श्री विष्णु शरण का जन्म दिनांक 2 अक्तूबर, 1899 को हुआ था। श्री विष्णु शरण जी वर्ष 1946-52 एवं 1952-57 की अवधि में जनपद मेरठ से उत्तर प्रदेश विधान सभा के कांग्रेसदलीय सदस्य रहे। वह लोक सभा के सदस्य भी रहे। श्री विष्णु शरण जी एक योग्य राजनीतिज्ञ थे। जिला परिषद् मेरठ के अध्यक्ष पद को भी उन्होंने सुशोभित किया। 1928 में नैनी जेल के दंगे के संबंध में उन्होंने 8 वर्ष कालेपानी की सजा कटी। काकोरी कांड सहित विभिन्न आंदोलनों में उन्होंने भाग लिया और कुल लगभग 18 वर्षों तक जेल में बंदी रहे।

मान्यवर, देश की आजादी की लड़ाई में श्री विष्णु शरण जी का बड़ा योग्यदान रहा है। वह आज हमारे बीच में नहीं हैं। उनके निधन से मेरठ की ही नहीं सारे प्रदेश की जो क्षति हुई है हम उसे पूरा नहीं कर सकते। मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरे दल की तरफ से, सदन की तरफ से उनके शोक संतप्त परिवार तक संवेदना भेजने का कष्ट करें।

मान्यवर, मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री वशिष्ट नारायण शर्मा का निधन 25 अगस्त, 1986 को हो गया। वह लगभग 70 वर्ष के थे। श्री वशिष्ठ नारायण शर्मा जी का जन्म दिनांक 6 फरवरी, 1917 को जनपद गाजीपुर के एक ग्राम में हुआ था। उन्होंने शास्त्री की उपाधि प्राप्त की थी। सर्वप्रथम 1952 में, 1957, 1962 तथा फरवरी, 1969के मध्यावधि चुनाव में जनपद गाजीपुर से कांग्रेस के टिकट पर आप चौथी बार उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये। देश की आजादी हेतु आपने अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलनों में भाग लिया और अनेकों बार जेल यात्रायें की।

मान्यवर, आज वशिष्ट नारायण शर्मा जी हमारे बीच में नहीं हैं । उन्होंने प्रदेश की जो सेवा की उसे हम भूल नहीं सकते हैं । हमारा अनुरोध है कि मेरी ओर से और सदन की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार तक संवेदना भेजने का कष्ट करें।

मान्यवर, मुझे बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री कमला सिंह यादव का निधन दिनांक 23 सितम्बर, 1986 को हो गया । वह 73 वर्ष के थे । स्वर्गीय श्री कमला सिंह यादव का जन्म 1913 में जनपद गाजीपुर के एक ग्राम में हुआ था । उन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से बी0 एस0 सी0 तथा एल0 एल0 बी0 की शिक्षा प्राप्त की । 1952 में निर्वाचन क्षेत्र सैदपुर जिला गाजीपुर से वह सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये थे ।वर्ष 1962-67 की अवधि में वह पुनः उक्त निर्वाचन क्षेत्र से ही प्रजा सोशलिस्ट पार्टी से विधान सभा के सदस्य बने । वर्ष 1943 से 1947 तक स्वर्गीय कमला सिंह जी वकालत करते रहे तदुपरान्त पुलिस विभाग में स्पेशल प्राजीक्यूटिंग आफिसर हो गये । यू0 पी0 स्टेट हैल्थ बोर्ड, स्टेट स्वायल कंजरवेशन बोर्ड तथा जिला गाजीपुर की अनेक शिक्षा संस्थाओं की प्रबंध समिति के भी वह सदस्य थे । भारतीय क्रान्ति दल एवं पिछड़ा वर्ग संघ, गाजीपुर के मंत्री, श्री भोला सिंह जूनियर हाई स्कूल बेचनगंज, खादी ग्राम संघ आश्रम, कादीपुर के एवं उत्तर प्रदेश कृषक समाज गाजीपुर के अध्यक्ष आदि पदों को भी उन्होंने सुशोभित किया । श्रमदान कार्य में उनको सर्टीफिकेट के साथ-साथ विशेष पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया । श्री कमला सिंह जी के निधन से जनपद गाजीपुर ने एक कुशल समाजसेवी खो दिया ।

उनके निधन से जनपद गाजीपुर को और इस प्रदेश को जो क्षति पहुंची है, उसको हम पूरा नहीं कर सकते हैं । मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से तथा सदन की ओर से उनके शोक-संतप्त परिवार को संवेदना भेजने का कष्ट करें ।

मान्यवर, मुझे बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री पारस नाथ सिंह का निधन दिनांक 26 अक्टूबर, 1986 को हो गया । वह लगभग 65 वर्ष के थे ।

स्वर्गीय श्री पारस नाथ सिंह जी का जन्म दिनांक 30 सितम्बर, 1921 को जनपद बस्ती के एक ग्राम में हुआ था । उन्होंने हाई-स्कूल तक कि शिक्षा प्राप्त की थी । वर्ष 1969 के निर्वाचन में उन्होंने निर्वाचन क्षेत्र-नानपारा जिला बहराइच से जनसंघ के टिकट पर विजय प्राप्त की और इस सम्मानित सदन के सदस्य बनें ।

स्वर्गीय श्री पारसनाथ जी एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं योग्य सामाजिक कार्यकर्ता थे । वह एक प्रगतिशील कृषक भी थे । खेतिहर मजदूरों के हितों की रक्षा हेतु उनका सक्रिय योगदान रहा वह 1968-69 में जनपद बहराइच में अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष रहे ।

श्री पारस नाथ सिंह जी के निधन से जनपद बहराइच ने एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व खो दिया है ।

उनके निधन से जनपद बहराइच को और इस प्रदेश को जो क्षति पहुंची है, उसको हम पूरा नहीं कर सकते हैं ।मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से तथा सदन की ओर से शोक-संतप्त परिवार को संवेदना भेजने का कष्ट करें ।

मान्यवर, मुझे बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री राम हर्ष चौधरी का निधन दिनांक 24 सितम्बर, 1986 को हो गया। वह लगभग 73 वर्ष के थे।

श्री राम हर्ष जी का जन्म वर्ष 1913 में जनपद बहराइच के एक परिवार में हुआ था। उन्होंने जूनियर हाई स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त की थी।

वर्ष 1974 के सामान्य निर्वाचन में उन्होंने कांग्रेस (इ) के टिकट पर निर्वाचन क्षेत्र फखरपुर, जिला बहराइच से निर्वाचित होकर प्रथम बार इस सम्मानित सदन में पदार्पण किया था।

स्वर्गीय श्री राम हर्ष जी ने युवावस्था में ही गांधी जी की प्रेरणा से कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली थी। वर्ष 1942 के आन्दोलन में उन्होंने भाग लिया और 6 माह तक वह कारागार में रहे। 1964 से 1977 तक जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष एवं महामंत्री पदों को उन्होंने सुशोभित किया। जन-सेवा में उनका अटूट विश्वास था।

श्री राम हर्ष जी के निधन से जनपद बहराइच ने एक कुशल समाजसेवी खो दिया। उनके निधन से जनपद बहराइच को और इस प्रदेश को जो क्षति पहुंची है, उसको हम पूरा नहीं कर सकते हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से तथा सदन की ओर से शोक-संतप्त परिवार तक संवेदना भेजने का कष्ट करें।

मान्यवर, मुझे बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री जगदीश प्रसाद का निधन दिनांक 13 जनवरी, 1987 को रात्रि में लम्बी बीमारी के उपरान्त हो गया। वह लगभग 81 वर्ष के थे।

श्री जगदीश प्रसाद जी का जन्म वर्ष 1906 में हुआ था। उन्होंने बी0 काम0 तक की शिक्षा प्राप्त की थी। वर्ष 1962 के सामान्य निर्वाचन में जिला बहराइच से कांग्रेस पार्टी के टिकट पर वह उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए थे।

श्री जगदीश प्रसाद जी एक कुशल कांग्रेसी कार्यकर्ता थे। अखिल भारतीय कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन में सर्वप्रथम स्वयंसेवक के रूप में प्रविष्ट हुए। उन्होंने लखनऊ के क्रिश्चियन कालेज में कुछ समय तक अध्यापन कार्य किया। अन्तरिम जिला परिषद् तथा भ्रष्टाचार निरोध समिति के सदस्य, जिला पत्रकार संघ एवं सर्राफा कमेटी के अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। पत्रकारिता तथा भ्रमण में उनकी विशेष रुचि थी। अपने जिले की प्रगति एवं रचनात्मक कार्यों में उनका सराहनीय योगदान रहा।

श्री जगदीश प्रसाद जी के निधन से जनपद बहराइच ने एक योग्य समाजसेवी खो दिया। उनके निधन से जनपद बहराइच को और इस प्रदेश को जो क्षति पहुंची है, उसको हम पूरा नहीं कर सकते हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से और सदन की ओर से शोक-संतप्त परिवार को संवेदना भेजने का कष्ट करें।

मान्यवर, मुझे बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री मो0 महमूद अली खां का निधन दिनांक 3 जनवरी,

1987 को हो गया । वह लगभग 74 वर्ष के थे।

श्री मोहम्मद महमूद अली खां का जन्म वर्ष 1913 में कैलाशपुर, जिला सहारनपुर में हुआ था। उन्होंने कक्षा 11 तक शिक्षा प्राप्त की थी।

वर्ष 1946 में वह सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । उसके पश्चात् वर्ष 1952, 1957, 1967, 1969 तथा 1974 के निर्वाचनों में भी कांग्रेस के टिकट पर जिला सहारनपुर से विजयी हुए।

श्री मोहम्मद महमूद अली खां एक कट्टर कांग्रेसी थे और उनका सम्पूर्ण जीवन कांग्रेस को समर्पित रहा । वर्ष 1959 में पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी, 1969 में राज्य मंत्री तथा 1971 में वह कैबिनेट स्तर के मंत्री रहे। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, सहारनपुर के चेयरमैन एवं को-आपरेटिव कन्ज्यूमर सोसाइटी के प्रधान रहे। वह लेखक भी थे और उनके अनेकों लेख समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए । ऐतिहासिक पुस्तकों तथा उर्दू साहित्य में उनकी विशेष रुचि थी ।

उनके निधन से जनपद बहराइच को और इस प्रदेश को जो क्षति पहुंची है, उसको हम पूरा नहीं कर सकते हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से तथा सदन की ओर से शोक-संतप्त परिवार को संवेदना भेजने का कष्ट करें।

मान्यवर, मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री सजीवन लाल का निधन हो गया। वह लगभग 63 वर्ष के थे । श्री सजीवन लाल जी का जन्म वर्ष 1923 में हुआ था। उन्होंने कक्षा 8 तक की शिक्षा प्राप्त की थी । वर्ष 1957 के सामान्य निर्वाचन में हसनगंज, उन्नाव से वह कम्युनिस्ट पार्टी के टिकट पर उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । 1969 के मध्यावधि चुनाव में पुनः उक्त निर्वाचन क्षेत्र से ही विजयी हुए। श्री सजीवन लाल जी का सामाजिक कार्यक्षेत्र प्रारम्भ से ही हसनगंज रहा। उन्होंने गरीबों की बहुत सेवा की । जिला किसान सभा के अध्यक्ष एवं कम्युनिस्ट पार्टी की प्रदेशीय कौंसिल के सदस्य रहे। अनेकों बार वह जेल भी गये । श्री सजीवन लाल जी के निधन से जनपद उन्नाव ने एक कुशल समाजसेवी खो दिया। श्री सजीवन लाल जी आज हमारे बीच में नहीं हैं, उनके न रहने से जो उन्नाव जिले को और इस प्रदेश को क्षति पहुंची है उसको हम पूरा नहीं कर सकते हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरे दल की ओर से और इस सदन की ओर से संवेदना उनके शोकसंतप्त परिवार को पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री शतरुद्र प्रकाश–

मान्यवर, बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि हिन्दी पुत्र वासुदेव सिंह जी की चिता की चिंगारी अभी बुझ भी न पाई थी कि राज नारायण जी का अकाल देहावसान हो गया । मान्यवर, कौन जानता था कि 1986 की अलविदा राजनारायण जी के आखिरी प्रणाम के साथ पूरी होगी ? मैं जहां तक जानता हूं कि हम बनारस वालों ने नये साल के सूर्योदय की अनुभूति भी न की थी और नये साल की पहली तारीख मुबारकबाद के साथ नहीं बल्कि राज नारायण जी को कन्धा देने और उनकी शव यात्रा को

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

हरिश्चन्द्र घाट पहुंचाने, उनके पार्थिक शरीर को पंच तत्व में विलीन करके गंगा में विसर्जित करने से प्रारम्भ हुई है। मेरी जानकारी यह है, बड़े बुजुर्ग बताते हैं कि बनारस में महामना मदन मोहन मालवीय जी के बाद यह दूसरी शव यात्रा थी जिसमें बनारस के ही लोग नहीं बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश के कोने-कोने से लोग आकर बड़ी मात्रा में शामिल हुए थे। यह बात साफ तौर पर कही जा सकती है कि 1913 में काशी के मोतीकोट गांव में जन्मे काशी पुत्र राज नारायण जी निःसन्देह भारतीय राजनीति के इतिहास पुरुष थे और सही मायने में वह बेताज के बादशाह थे। मैं, जो उनके जीवन के बारे में थोड़ा परिचित हूं, यह समझता हूं कि काशी विश्व-विद्यालय में महामना मदन मोहन मालवीय जी के चरणों में बैठकर उन्होंने ज्ञानार्जन किया और बी0 ए0, एल-एल0 बी0 तक अपनी शिक्षा पूरी की।

1942 की क्रान्ति में राज नारायण जी ने एक क्रान्तिकारी की हैसियत से हिस्सा लिया और सत्ता मिलने के बाद यह संकल्प लिया कि देश की समता की, लोकतंत्र की लड़ाई हिंसा से नहीं बल्कि अहिंसक तरीके से लड़ेंगे। राज नारायण जी 1947 से लेकर आज तक सबसे बड़े सिविल नाफरमान के रूप में जाने जाते हैं। बनारस के जिला कारागार में सम्पूर्णानन्द जी से उन्होंने समाज के दर्शन की दीक्षा ली, उसके बाद आचार्य नरेन्द्र देव और डा0 राम मनोहर लोहिया से समाजवादी विचारों की शिक्षा प्राप्त करने के बाद पूरी तरह से उनके संस्कारी हो गये। 1952 और उसके बाद 1957 में, 2 बार वह इस विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए हैं। 1966 में पहली बार वह राज्य सभा के लिए निर्वाचित हुए और 1974 में वह दूसरी बार राज्य सभा के लिए निर्वाचित हुए। 1977 में रायबरेली संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से उन्होंने तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को पराजित किया था। मैं समझता हूं कि अन्याय, जुल्म के खिलाफ आन्दोलन और संघर्ष का दूसरा नाम अगर कोई है तो राज नारायण है, राज नारायण आन्दोलन के पर्यायवाची रहे हैं। राज नारायण जी राजनीति के पर्यायवाची रहे हैं। लोकतंत्र के, राष्ट्रवादिता के विकास और उसकी मानसिकता के आधारभूत तथ्य रहे हैं। उन्होंने लोकतंत्र को अपने नजरिये से व्यक्त किया है वह किसी लोकभाषा या लोकभावना पर आधारित नहीं है। राज नारायण जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि राज नारायण जी की जिन्दगी की सबसे बड़ी सम्पत्ति थी कि वे कभी निराश नहीं होते थे। जिन्दगी के बड़े से बड़े दौर में वे कभी निराश नहीं होते थे, कभी हतोत्साहित नहीं होते थे। यह उनके जीवन का सबसे बड़ा गुण रहा है। एक रूसी विद्वान ने कहा है कि कर्तव्य करते रहना चाहिए और परिणाम के प्रति आशा नहीं रखनी चाहिए। डा0 राम मनोहर लोहिया का कहना था कि यदि निराश भी रहें, लेकिन कर्तव्य करते रहें। उन्होंने निराशा का, कर्तव्य का बोध कराया था।

मैंने पढ़ा था कि नेपोलियन के शब्द कोष में असम्भव नाम का शब्द नहीं था वैसे ही राजनारायण जी के जीवन में निराशा नाम की कोई चीज नहीं थी। वे जीवन में कभी निराश नहीं हुए। मैं समझता हूं कि भारतीय राजनीति में सन् 74 से लेकर 79 तक राज-

नारायण जी के जीवन का चरमोत्कर्ष रहा। उन्होंने 12 जून, 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय में श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक मुकदमें में पराजित किया था और उसके बाद 1977 में रायबरेली के संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से श्रीमती इन्दिरा गांधी को पराजित किया। सन् 1977 से लेकर 1979 तक प्रधानमंत्री को हटाना और बनाना राजनारायण जी के ही वश की बात थी। मैं समझता हूं कि इस देश की राजनीति में राजनारायण जी एक मौलिक व्यक्ति रहे हैं। वे संसदीय जीवन में भी परिलक्षित होते हैं और सत्याग्रही के रूप में भी परिलक्षित होते हैं। लोकतंत्र को उन्होंने अपनी निराली शैली में अभिव्यक्त किया है। वे भारतीय राजनीति में अद्वितीय और बेजोड़ हैं। वे एक ऐतिहासिक व्यक्ति रहे हैं।

बहुत से लोगों ने राजनारायण जी को राजनीति का कबीर कहा था। वे खुद भी कहते थे जो घर जारे आपना, चले हमारे संग। डा0 योगेश्वर ने उन्हें आपात्काल का धूमकेतु कहा था। मैं समझता हूं कि भारत के राजनीतिक इतिहास में राजनारायण जी का कोई पर्यायवाची नहीं है, कोई विकल्प नहीं है। उनकी किसी से कोई तुलना नहीं की जा सकती है। बहुत से लोग उनके द्वारा प्रारम्भ की गई शैली को राजनारायणी शैली के नाम से प्रचारित करते हैं। मैं समझता हूं कि इस देश के इतिहास में बहुत से लोग प्रधान मंत्री हो सकते हैं, बहुत से लोग मंत्री हो सकते हैं, बहुत से लोग नेता हो सकते हैं लेकिन इस देश के इतिहास में राजनारायण जी जैसा व्यक्तित्व और चरित्र मिलना मुश्किल है। किसी ने कहा था कि–

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पर रोती है, तब जाकर कहीं होता है राजनारायण जी का नाम।

मैं अन्त में यह कहना चाहूंगा कि संघर्ष और आन्दोलन के प्रणेता, राजनैतिक योद्धा स्वर्गीय श्री राज नारायण जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, इसके साथ ही साथ मा0 नेता सदन ने अन्य नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं, स्वर्गीय वासुदेव सिंह जी, स्वर्गीय जयराम वर्मा, स्व0 प्रभाकर सिंह, स्व0 प्रभाकर शुक्ल, स्व0 दीनानाथ, स्व0 ब्रज बल्लभ सिंह, स्व0 राधाकृष्ण अग्रवाल, स्व0 विष्णु स्वरूप, स्व0 विष्णु शरण, स्व0 वशिष्ट नरायन शर्मा, स्व0 कमला सिंह यादव, स्व0 पारस नाथ, स्व0 राम हर्ष चौधरी, स्व0 जगदीश प्रसाद, स्व0 मो0 महमूद अली खां, स्व0 सजीवन लाल, के बारे में उनसे मैं अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

*श्री मुलायम सिंह यादव–

मान्यवर, स्व0 राज नारायण जी के संबंध में जितना कहा जाय वह कम है। अपने विद्यार्थी जीवन से लेकर जीवन के अंतिम दिनों तक वे संघर्ष करते रहे। अपने अन्तिम दिन से एक दिन पहले सभी डाक्टर और सभी शुभचिन्तक सुबह 10 बजे से जब तक वह होश में थे, उनके मना करने पर भी वे अपने सभी साथियों से बात करते रहे। अन्तिम क्षणों में भी देश के प्रति सोचने के अलावा उनके मन में कोई बात नहीं थी। स्व0 राज नारायण जी डा0 राममनोहर लोहिया के बाद सबसे बड़े समाजवादी नेता थे। उनको युग पुरुष कहा जाय, तो अतिश्योक्ति न होगी। युग पुरुष वही होता है जो युग को बदलता है। सन् 77 में हमारे देश में बदलाव आया इसमें राज नारायण जी का योगदान था। जयप्रकाश जी ने यह बदलाव

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

किया था, परन्तु बुनियादी तौर पर राज नारायण जी के संघर्ष का ही नतीजा था कि देश में इतना बड़ा आन्दोलन खड़ा हो गया। राज नारायण जी सदैव सिद्धान्तों के प्रति लड़ते रहे कितना भी बड़ा नेता हो यदि राज नारायण जी के मन में कोई बात उचित है, तो उन्होंने उसे उससे उचित साबित कर दिखाया। राज नारायण जी को जो सम्मान देश में मिलना चाहिये, उसमें मान्यवर अभी से कटौती की जा रही है। यह नोट आया है इसमें लिखा है कि बनारस का नेता। राज नारायण जी बनारस के नेता नहीं थे, वह दुनिया के नेता थे विश्व के नेताओं में उनकी गिनती है। इतने बड़े विद्वान और कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान् देश में हलचल पैदा करने वाले नेता राज नारायण जी के अभाव में देश की राजनीति में हलचल दिखायी नहीं देती।

आज छात्रों की किसानों की समस्याओं के प्रति ध्यान देने वाला कोई नहीं है। राज नारायण जी होते तो आज इन समस्याओं के मुकाबले अकेले ही वह लड़ते।

लेकिन जो इनका व्यक्तित्व विवादास्पद रहा है यह हमारे देश का दुर्भाग्य है। 31 दिसम्बर, 86 तक स्वर्गीय राजनारायण सिंह के प्रशंसक बहुत कम दिखाई देते थे। सड़क और गलियों में रास्ते चलते लोग राजनारायण को कोसते थे लेकिन पहली जनवरी के बाद कोई भी ऐसा नहीं दिखाई पड़ता था जो उनकी तारीफ न करता हो। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि जिन्दा रहते हम किसी को सही रूप में नहीं पहचान पाते हैं और न सही सम्मान देते हैं। हमारे देश की राजनीति मौत से जुड़ गई है, मौत से हम लाभ उठाते हैं लेकिन जिन्दा रहते सम्मान नहीं करते हैं। आज हमारे बीच एक महान नेता, महान विचारक और निराला व्यक्तित्व उठ गया है। जिससे हमारे देश की बहुत क्षति हुई है हम सभी लोग दुखी हैं और आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारी और हमारे दल की संवेदना उनके परिवार और साथियों तक पहुंचा दी जाय।

इसी संदर्भ में श्री प्रभाकर सिंह, प्रभाकर शुक्ल, दीनानाथ, बृजवल्लभ सिंह, राधाकृष्ण अग्रवाल, विष्णुस्वरूप, विष्णुशरण, वशिष्ठ नारायण शर्मा, कमला सिंह यादव, पारसनाथ सिंह, रामहर्ष चौधरी, जगदीश प्रसाद, मोहम्मद महमूद अली खां तथा सजीवन लाल जो इस विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं। इन लोगों ने भी अपने जीवन में देश और समाज की बहुत सेवा की है। इनके निधन से हम सभी लोग दुखी हैं। इस सदन के सभी स्वर्गीय सदस्यों के परिवार तक हमारी और हमारे दल की संवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, आज राजनारायण जी हमारे बीच में नहीं हैं राजनारायण भारतीय इतिहास में एक ऐसे व्यक्ति का नाम है, जिसने भारत की राजनीति को एक नया मोड़ देने का काम किया था। राजनारायण जी ने विद्यार्थी जीवन से क्रान्तिकारी के रूप में जीवन शुरू किया और गांधी जी से प्रभावित होकर उन्होंने अहिंसा का रास्ता चुना और उसमें जो इन्होंने इतिहास बनाया है, आने वाले समय में वह स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। राजनारायण जी कभी अन्याय नहीं बर्दाश्त करते थे। उनको लोग नेता के नाम से भी जानते हैं। यह बहुत कम लोग जानते हैं कि वह एक जमींदार परिवार के थे और हरवाहे को खेत का अनाज स्वयं कटवा कर दे दिया करते थे। मेहतर से सफाई बंद करवाकर स्वयं सफाई करने जाते थे। आज नेता जी हमारे बीच

में नहीं हैं लेकिन ऐसा कोई नेता नहीं है जिसने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अपने जीवन के स्वर्णिम 17 साल भारत की जेलों में बिताये हों। वे बासठ बार जेल गये और छोटे-छोटे मामलों पर भी वे अनशन करते थे। रेलवे का फाटक दो मिनट से अधिक समय तक न बंद हो, इस पर भी उन्होंने सत्याग्रह किया। किसी अन्याय को वह बर्दास्त नहीं करते थे, परिवार-वाद के बहुत खिलाफ थे और जो डा0 लोहिया ने लड़ाई शुरू की थी उसका अन्त राज नारायण जी ने वर्ष 1977 में अपने बल पर करके दिखला दिया। राज नारायण जी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें विदेशों में 77 का जिमी कार्टर कहा जाता था। नेता जी ने ऐसे काम किए हैं मान्यवर कि शायद दुनिया के इतिहास में किसी दूसरे व्यक्ति ने किए हों उन्होंने कई प्रधान मंत्री बनाए और कई प्रधान मंत्रियों को उनके पद से उतारा। मान्यवर, यह इतनी बड़ी और दुर्लभ बात है शायद ही दुनिया के इतिहास में ऐसा आदमी कोई रहा हो जिसने दुर्लभ काम किए हों। आज नेता जी हमारे बीच नहीं हैं। नेता जी शायद गरीबों, असहाय व अन्य ऐसे ही लोगों के लिए जिनके लिये आज लोग सिर्फ जबानी कुछ कह दिया करते हैं, बराबर उनका हर प्रकार से सहयोग देते थे और उनके हक के लिए सदैव लड़ाई लड़ते रहे। बंगलों में वह रहते थे, लेकिन उसके अन्दर जो सबसे छोटी कोठरी होती वह उसमें अपना ठौर-ठिकाना रखते थे और वह उसके फर्श पर आराम करते थे।

मान्यवर, आज राज नारायण जी नहीं हैं। ऐसी ऊंचाई पर पहुंचने के बाद भी अगर आज हम देखें उनके परिवार को। उनके परिवार के लोग आज एक मामूली क्लर्क के रूप में अपना जीवन-यापन कर रहे हैं। अगर राज नारायण जी चाहते तो उनके बच्चे भी अन्य तमाम मंत्रियों की तरह बड़े-बड़े पदों पर आसीन होते। लेकिन जब तक वह जीवित रहे उनके परिवार का कोई भी सदस्य उनके साथ देखा नहीं जा सकता था और उनके पूरे राजनीतिक जीवन में परिवार के किसी सदस्य को शायद ही कोई लाभ मिला हो। ऐसा दुर्लभ व्यक्ति भारतीय इतिहास में बहुत कम मिलते हैं। राज नारायण जी एक ऐसे व्यक्ति थे जिनसे हम सभी लोगों को प्रेरणा श्रोत मिलता है। इस-लिए मैं मान्यवर, चाहूंगा कि आपके सचिवालय से जो उनके बारे में बनारस के नेता लिखा गया है उसको संशोधित करा दें। वह बनारस के नेता नहीं रहे, उत्तर प्रदेश के नेता नहीं रहे बल्कि पूरे देश के नेता रहे। उनके प्रति यह लिखना कि वे एक बनारस के नेता थे, शोभा की बात नहीं है। इनके निधन से हम सब बहुत दुखी हैं।

मैं आशा करता हूं कि आप शोक-संतप्त परिवार तक हमारी व हमारे दल की ओर से श्रद्धांजलि भेजने की कृपा करेंगे और साथ ही सर्वश्री स्व0 मा0 सदस्यगण प्रभाकर सिंह, प्रभाकर शुक्ला, दीनानाथ, बृज बल्लभ सिंह, राधाकृष्ण अग्रवाल, विष्णु स्वरूप, विष्णु शरण, वशिष्ठ नारायण शर्मा, कमला सिंह यादव, पारस नाथ सिंह, राम हर्ष चौधरी, जगदीश प्रसाद, मोहम्मद महमूद अली खां तथा सजीवन लाल के प्रति भी हम अपनी ओर से भी और अपने दल की ओर से भी संवे-दना देते हैं और आपसे आशा करते हैं कि आप इन शोक-संतप्त परिवारों तक हमारी यह श्रद्धांजलि भेजने की कृपा करेंगे।

श्री कल्यान सिंह–

मान्यवर, आज हमारे बीच में एक ऐसा प्रख्यात नाम नेता राज नारायण जी

नहीं है। इसका हम सभी लोगों को बहुत दुख है। उनके जीवन में यूं तो अनेकों गुण हैं, परन्तु मैं उनके दो ऐसे प्रमुख गुणों का उल्लेख करना चाहता हूं। पहला उनमें जो गुण था, वह थी संकल्पशीलता और दूसरा गुण था उस संकल्प को पूरा करने के लिए संघर्षशीलता। उन्होंने अपने जीवन में जो भी संकल्प लिया उसको पूरा करने के लिए पूरी शक्ति से लड़ाई लड़ी। सामाजिक गैरबराबरी, आर्थिक शोषण और विषमता के विरुद्ध वह जीवन पर्यन्त संघर्ष करते रहे। उनके जीवन से एक ही चीज की प्रेरणा मिलती है कि जीना है तो मरना होगा और कदम-कदम पर लड़ना होगा। आज एक ऐसा जुझारु व्यक्तित्व जो आम जनता के लिये लड़ता था, वह हमारे बीच में नहीं है, इसके लिए हम दुखी हैं। मान्यवर, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार को मेरी और मेरे दल की ये संवेदनाएं भेजने की कृपा करें। इसके साथ ही मान्यवर, माननीय नेता सदन, मा0 नेता विरोधी दल और अन्य मा0 नेताओं ने सर्वश्री प्रभाकर सिंह, प्रभाकर शुक्ला, दीनानाथ, वृजबल्लभ सिंह, राधाकृष्ण अग्रवाल, विष्णुस्वरूप, विष्णुशरण दुब्लिश, रामहर्ष चौधरी, कमला सिंह यादव, पारस नाथ सिंह, जगदीश प्रसाद, सजीवन लाल, मोहम्मद महमूद अली खां व वशिष्ठ नारायण शर्मा इन सबके निधन के संबंध में जो शोक संवेदनाएं प्रकट की हैं, उनके साथ मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करते हुए आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी और मेरे दल की ये संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार को भेजने की कृपा करें।

*श्री मित्रसेन–

मान्यवर, मा0 नेता सदन, मा0 नेता विरोधी दल और अन्य नेताओं ने स्वर्गीय राज नारायण के बारे में जो शोक सम्वेदनाएं व्यक्त की हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। स्वर्गीय राज नारायण जी कुछ गुणों के विशेष प्रतीक थे। वे स्वयं को हनुमान कहा करते थे। वह एक इतिहास पुरुष थे। उनकी कुछ विशेषताएं थीं। उनके अन्दर जोखिम उठाने का माद्दा था। वह एक संघर्षशील व्यक्ति थे। वे हमारे देश और प्रदेश के नौजवानों के लिए प्रेरणा के स्रोत थे। हमें उनके गुणों से प्रेरणा लेनी चाहिये। वह आज हमारे बीच में नहीं हैं। ऐसे ऐतिहासिक पुरुष के बारे में मैं अपनी और अपने दल की ओर से संवेदना व्यक्त करते हुए आपसे निवेदन करता हूं कि ये संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

आज हमारे बीच में स्वर्गीय कमला सिंह यादव जी, सजीवन लालजी, श्री राधाकृष्ण अग्रवाल, श्री विष्णु स्वरूप, श्री विष्णु शरण दुब्लिश, श्री वशिष्ठ नारायण शर्मा, श्री बृज बल्लभ सिंह, श्री दीनानाथ, श्री प्रभाकर शुक्ल, श्री रामहर्ष चौधरी, श्री जगदीश प्रसाद, श्री मोहम्मद महमूद अली खां, श्री पारस नाथ सिंह और श्री प्रभाकर सिंह भी नहीं रहे। ये जो दिवंगत आत्माएं आज हमारे बीच में नहीं हैं, हम चाहते हैं कि इन लोगों के प्रति हमारी शोक संवेदनाएं इनके शोक संतप्त परिवार तक भेजने की कृपा करें।

श्री कौशिक रमाशंकर–

मान्यवर, नेता राजनारायण जी आज हम लोगों के बीच में नहीं हैं। अद्भुत

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

क्षमताओं के धनी श्री राजनारायण दिनांक 31 दिसम्बर, 1986 को हम लोगों का साथ छोड़कर चले गये। मान्यवर, हिन्दुस्तान के राजनैतिक इतिहास में मा0 राज नारायण जी का योगदान स्वर्णाक्षरों में हमेशा-हमेशा अंकित किया जायगा। श्री राज नारायण ने विधान सभा और संसद को प्रदेश की जनता की आकांक्षाओं और देश की जनता की आकांक्षाओं का आइना बनाने के लिए भरसक प्रयास किया और मुखर विरोध की एक शैली दी, जो आवश्यक है लोकतंत्र को कायम रखने के लिये, जो आवश्यक है संसदीय परम्पराओं को प्रतिस्थापित करने के लिये और जो आवश्यक है जनता की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये। सन् 1952 से वे इस विधान सभा के सदस्य रहे और उसमें जो विरोध की भूमिका की, जनता की आकांक्षाओं की प्रतीक का आइना विधान सभा को होना चाहिए, ऐसी परिकल्पना राजनारायण जी ने रखी और उस शैली को पुष्ट किया जो संसद तक चली। अद्भुत ऊर्जा राजनारायण नाम के व्यक्ति में थी। कोई भी व्यक्ति जो हिन्दुस्तान के समाज में व्याप्त विषमताओं को जानता था, परिचित था, विडम्बनाओं से परिचित था, उनके सामने रहते हुए वह यह एहसास करता था कि समाजवाद दूर की चीज नहीं है, समता दूर की चीज नहीं है। हम लोग संघर्ष करें। ऐसी अद्भुत क्षमता उनमें थी। उस अद्भुत ऊर्जा के रहते उनका 17 सालों का जीवन जेलों में बीता। उस अद्भुत उर्जा के तहत प्रदेश में ही नहीं, देश के युवकों के नेता अंतिम समय तक वे बने रहे। 69 वर्ष की आयु में भी वे युवकों के नेता बने रहे। गरीबों के वे मसीहा थे। इस समाज में व्याप्त विषमताओं को मिटाने के जो लोग प्रतिबद्ध थे, उन लोगों को इनसे आशायें थी। श्री राजनारायण जी ने राजनीति करने के लिये जिस प्रकार से त्याग का परिचय दिया, जो परिवार के त्याग का परिचय दिया, अपने स्वार्थों के त्याग का परिचय दिया, उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है।

मान्यवर, मैं यहां यह उल्लेख करना चाहूंगा कि सोशलिस्ट पार्टी की कार्य समिति की बैठक चल रही थी, वहां आचार्य नरेन्द्र देव मौजूद थे, कार्य समिति की बैठक के बीच में उन्हें यह तार मिला कि उनका जवान बेटा मर गया है। लेकिन, वह बैठक में बैठे रहे। जब कार्य समिति की बैठक खत्म हुई, तब इन्होंने आचार्य नरेन्द्र जी को इस दुखद घटना को बताया। मान्यवर, उनके चले जाने से जो अपूर्णीय क्षति हुई है हिन्दुस्तान की राजनीति की क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना असंभव सा ही है। मैं उनके प्रति अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी सम्वेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, सर्वश्री प्रभाकर सिंह, श्री प्रभाकर शुक्ला, दीनानाथ, बृज बल्लभ सिंह, राजकृष्ण अग्रवाल, विष्णु स्वरूप, विष्णु शरण, वशिष्ठ नारायण शर्मा, कमला सिंह यादव, पारस नाथ, रामहर्ष चौधरी, जगदीश प्रसाद, मो0 महमूद अली खां, संजीवन लाल इन महानुभावों के निधन से इस प्रदेश की जो क्षति हुई है, उसके प्रति भी अपना दुख प्रकट करते हुए और उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि प्रकट करते हुए यह निवेदन करता हूं कि मेरी ओर से तथा दल की ओर से उनके शोक संतप्त परिवारजनों तक हमारी संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

श्री राज किशोर सिंह–

मान्यवर राजनारायण जी मेरे जिले व मेरे निर्वाचन क्षेत्र के थे। उनसे मेरा करीब का संबंध था। आजादी की लड़ाई में भी हम दोनों एक साथ थे। और वे हमारे साथ बहुत दिनों तक बनारस सेन्ट्रल जेल में थे। नेता जी जमींदार परिवार में जन्मे जरूर थे, लेकिन वह प्रारम्भ से ही जमींदारी प्रथा के खिलाफ, जमींदारों के खिलाफ उन्होंने झंडा बुलंद किया था। उन्होंने किसानों की जमीन की लड़ाई के लिए संघर्ष किया। उन्होंने नौजवानी के समय में, जब वे राजनीति में प्रवेश किये थे, तो उन्होंने सबसे पहले बनारस जिले के अदलपुरा में, जहां किसानों की हजारों-हजारों एकड़ जमीन ली जा रही थी कृषि क्षेत्र के नाम पर, पशुपालन के नाम पर, वहां पर उन्होंने संघर्ष किया और किसानों की जमीन निकलवाने में कामयाबी हासिल की थी। राजनारायण जी न केवल देश के नेता थे, बल्कि उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी ख्याति प्राप्त की थी। वे अनूठे व्यक्तित्व के व्यक्ति थे, जिसके कारण न केवल देश में ही उनका नाम फैला, बल्कि देश की सीमा से बाहर दूसरे मुल्कों में भी उनका नाम फैला।

मान्यवर, उन्होंने अपना राजनैतिक जीवन सोशलिस्ट पार्टी से शुरू किया। सोशलिस्ट पार्टी के जो महान नेता थे उनसे उनका घनिष्ट संबंध था। उन्होंने अपना राजनैतिक जीवन सोशलिस्ट बनकर ही बिताया और जीवन के अंतिम समय में सोशलिस्ट पार्टी में ही अपना तन छोड़ा। उन्होंने हिन्दुस्तान की राजनैतिक क्षेत्र में जो भूमिका निभाई वह सचमुच में अद्वितीय थी। उन्होंने जहां जोड़ने का काम शुरू किया, लेकिन जब उन्होंने देखा कि परिस्थितियां बदल गई हैं और अब इसकी आवश्यकता नहीं है तो उन्होंने उसके खिलाफ अपनी आवाज उठाई और उसे तोड़ा। ऐसा नेता शायद कहीं मिल सके। वह हमारे बीच में नहीं हैं। उनको मैं अपनी तरफ से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे यह सम्वेदना के भाव उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

इसी प्रकार आज हमारे बीच में इस सदन के कई माननीय सदस्य हमारे बीच से चले गये हैं जिनमें श्री प्रभाकर सिंह, प्रभाकर शुक्ल, श्री दीनानाथ जी, श्री बृज बल्लभ, श्री राधा कृष्ण अग्रवाल, श्री विष्णु स्वरूप, श्री विष्णु शरण दुब्लिश, राम हर्ष चौधरी, श्री कमला सिंह यादव, श्री पारसनाथ सिंह, श्री जगदीश प्रसाद, श्री संजीवन लाल, मो0 महमूद अली खां और श्री वशिष्ट नारायण शर्मा जी हैं। इन सभी नेताओं के प्रति मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारे ये संवेदना के भाव पहुंचाने की कृपा करेंगे। जहां तक श्री संजीवन लाल जी का प्रश्न है, वह कम्युनिस्ट पार्टी के नेता थे और उन्नाव के रहने वाले थे। वह मजदूरों के मसीहा थे। उनके निधन से मजदूरों की बहुत क्षति हुई है जो अपूर्णीय है।

श्री राम नरेश यादव–

नेता राजनारायण जी के निधन के संबंध में माननीय नेता सदन ने और दूसरे नेताओं ने जो अपने विचार व्यक्त किए हैं और उनके साथ-साथ इस सदन के जिन सम्मानित सदस्यों के निधन के प्रति जो भाव प्रकट किये गये हैं, उनसे मैं

भी अपने को सम्बद्ध करता हूं और चाहता हूं कि हमारे ये संवेदना के भाव उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। श्री राज नारायण जी बनारस के एक छोटे से गांव में जन्मे थे, लेकिन देश की राजनीति में वह जीवन-पर्यन्त छाये रहे। विद्यार्थी जीवन से लेकर मृत्यु शैया तक निरन्तर उनके मन में राष्ट्रीयता और देश में फैली सामाजिक विषमताओं को हटाने के साथ-साथ समतामूल समाज का भाव उनके मन में बना रहा। बनारस के हिन्दू विश्वविद्यालय के राजनैतिक जीवन से लेकर धीरे-धीरे उन्होंने जिस तरह से सोशलिस्ट पार्टी के आन्दोलनों में भाग लिया और उसका नेतृत्व किया वह राजनैतिक इतिहास में उनकी एक अनोखी देन है जो स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। चाहे वह जमीन पर कब्जा दिलाने का मामला हो और चाहे इस देश के अन्दर जो समय-समय पर साम्प्रदायिकता की आग जलती है, उसे मिटाने का सवाल हो बड़ी बहादुरी के साथ और संघर्ष के साथ वह उसका डटकर मुकाबला करते थे।

वह इस देश के एक अप्रतिम संघर्ष योद्धा थे। जब-जब भी उन्हें ऐसा लगा कि अब परिस्थितियां बदल गई हैं तो उन्होंने कई राजनैतिक मोड़ भी दिये। 1971 के संसदीय चुनाव ने, जिसने इस देश में एक क्रान्ति ला दी थी और उसके बाद 1975 में जब इमरजेन्सी लगी थी उसके बाद 1977 में देश की जनता की जो भावना थी, उसी के अनुरूप वह संसद में पहुंचे। और फिर मोरार जी भाई प्रधान मंत्री के नेतृत्व में गठित सरकार में जब स्वास्थ्य मंत्री बने तो उनके मन में वहां भी गांव के जो गरीब लोग थे, उनके बारे में जो सारी चीजें थीं, जन स्वास्थ्य रक्षक की जो योजना चलायी, वह आने वाले दिनों में स्वास्थ्य विभाग के लिए अनुकरणीय और आदर्श की चीज बनी रहेगी। जिसने 58 बार जेल में जाकर 17 वर्ष अपने जीवन के जेल में बिताये हों और वहां भी समाजवादी चिन्तन और विचार जो रहता था उसका प्रस्फुटन अपने कार्यकर्ताओं में डालने का प्रयास किया, जिसके फलस्वरूप उनके अनुयायी उनके पथ पर चलने का काम कर रहे हैं। कहीं भी कोई भी घटना हो जाय, वाराणसी में जो काण्ड हुआ तथा और जगहों पर जो घटनायें हो रही हैं तो वे बैठने वाले नहीं थे, फौरन वहां पहुंच जाते थे। श्री कल्यान सिंह जी बैठे हैं उनके यहां उतरौली में एक विद्यार्थी पर गोली चली थी। विद्यार्थी चाहते थे कि बिजली मिले और न मिले तो मिट्टी का तेल मिले। जब अधिकारियों ने ध्यान नहीं दिया तो विद्यार्थियों ने आन्दोलन किया, उन पर लाठी चार्ज कराया गया और जिस समय गोली के द्वारा हत्या हुई, उस समय राज नारायण जी अस्वस्थ थे लेकिन फिर भी वहां पहुंचे और लोगों में जो असन्तोष था और आक्रोश था, उसको शान्त किया। कहीं भी कोई घटना हुई हो, साम्प्रदायिक तनाव हो, वे वहां पहुंच जाते थे।

कबीरदास जी के शब्दों में वे राजनीतिक फक्कड़ थे। वे झुकते नहीं थे, समस्याओं का समाधान करने की उनकी क्षमता अभूतपूर्व थी। निश्चित रूप से आज जब ऐसा व्यक्तित्व हमारे बीच से चला गया है, हमारी अपूर्णीय क्षति हुई है। जिस समय उनकी शव-यात्रा वाराणसी में निकल रही थी, मरने के बाद सचमुच दिखायी पड़ा कि जो उनके कट्टर से कट्टर विरोधी भी थे, वे अपना विरोध भूलकर, सड़कों में एक पंक्ति में खड़े थे, वाराणसी के नगरवासियों ने फूलमालायें

डालकर जैसे उनका अभिनन्दन किया। त्रिपाठी जी बैठे हैं, मा0 स्वास्थ्य मंत्री जी ने देखा होगा कि कैसे लोग वहां पहुंचे और उनके अंतिम दर्शन कर माल्यार्पण किया इससे शिक्षा मिलती है कि सचमुच में देश में जो महान चरित्र के संघर्षशील लोग होते हैं और अन्याय के विरुद्ध झण्डा बुलन्द करने वाले लोग होते हैं, वे कैसे प्रेरणा की वस्तु बन जाते हैं, जैसे नेता जी थे।

इन्हीं शब्दों के साथ उनके प्रति अपने और अपने दल की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और चाहता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी सम्वेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

इसके अतिरिक्त श्री कमला सिंह यादव, श्री सजीवन लाल, श्री राधाकृष्ण अग्रवाल, श्री विष्णु स्वरूप, श्री विष्णु शरण, श्री वशिष्ठ नारायण शर्मा, श्री बृज बल्लभ सिंह, श्री दीनानाथ, श्री प्रभाकर शुक्ल, श्री रामहर्ष चौधरी, श्री जगदीश प्रसाद, श्री मोहम्मद महमूद अली खां, श्री पारस नाथ सिंह और श्री प्रभाकर सिंह के दुखद निधन पर उनके प्रति भी मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और चाहता हूं कि उनके प्रति भी शोक सन्तप्त परिवारों तक हमारा सम्वेदना संदेश पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री देव कुमार यादव–

मान्यवर, स्वर्गीय श्री राज नारायण जी के संबंध में जो भावभीनी श्रद्धांजलि इस माननीय सदन में प्रस्तुत की गयी है, उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

मान्यवर, राजनारायण जी के उठ जाने से इस देश की बड़ी शक्ति चली गयी है जिसकी पूर्ति सच्चे अर्थों में नहीं की जा सकती है। शायद ही देश में कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसने अपने जीवन में 58 बार जेल की यात्रा की हो। जहां कहीं भी इन्सान का खून गिरा इस मुल्क में, अधिकारों की रक्षा के लिये उन्होंने हमेशा अपना योगदान किया। उन्होंने मजलूम व पीड़ित दास्तानों को इस जमीन पर सहारा दिया जिसके लिये कहना पड़ता है–

"बड़े गौर से सुन रहा था जमाना,
तुम्हीं सो गये दास्तां कहते-कहते।"

मान्यवर, वे लोगों की दास्तानें डाक्टर राम मनोहर लोहिया की तरह ही सुनते थे। जब डाक्टर राम मनोहर लोहिया अपनी अन्तिम सांसें ले रहे थे तो उनको चिन्ता थी कि मेरे बाद कौन गरीबों की, पीड़ितों की मदद करेगा। श्री राज नारायण जी ने उनकी परम्परा को कायम रखा, जो चिन्ता उनको अपने अन्तिम क्षणों में थी, उस दुख को उन्होंने अपने प्रयास से दूर किया। शोषित और पीड़ित जनता उनके व्यक्तित्व से यही अपेक्षा भी रखती थी। आज जब देश इतने नाजुक दौर से गुजर रहा है, हमारी समझ से देश एक विशिष्ट परिस्थिति से गुजर रहा है, इस समय उनकी सख्त जरूरत थी।

इसके साथ ही हम और उन सभी माननीय दिवंगत सदस्यों का जिनके कि नाम माननीय नेता सदन ने तथा और भी अन्य विरोधी दल के नेताओं ने लिये हैं, उन सबसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। ये सभी दिवंगत लोगों ने क्रान्तिकारी आन्दोलनों में भाग लिया था और देश की सेवा करते-करते ही उन्होंने अपने जीवन की आहुति दी है। श्री दुब्लिश को तो सजा भी हुई थी। श्री सजीवन लाल जी ने शोषित और पीड़ित जनता के लिये अपने जीवन में बड़ा योगदान दिया। मेरा आग्रह है कि मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से इन सबके शोक संतप्त परि-

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

वारों तक हमारी समवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री फजलुल बारी–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री राज नारायण जी के बारे में अभी यहां पर बहुत कुछ कहा गया है और आगे भी बहुत कुछ कहा जायेगा। राजनारायण जी जनता के बीच नेता जी के नाम से जाने-पहचाने जाने लगे थे। आज वे हमारे बीच में नहीं रहे, उनके बारे में जितना भी कहा जाय, वह कम है। उनकी पूरी शखशियत ही ऐसी थी कि उन पर कोई हावी नहीं हो सका। जब तक संघर्ष की राजनीति चलती रहेगी तब तक उनका नाम जनता के बीच बना रहेगा, व्यक्ति गुजर गया पर नाम बना रहेगा। अक्सर जेल में मैं उनके साथ रहा। नेता जी नौजवानों के नेता थे। उनका कहना था कि इस देश का नौजवान मुल्क के गोशे-गोशे में रहता है और नेता जी उनका नेतृत्व करते थे। गरीबों के दिलों की धड़कन हो या कमजोरों के जीवन पर पुलिस का जुल्म हो, अब उनका रखवाला हमारे बीच में नही है। इस सियासत के मैदान में बहुत से नौजवान हैं जो कि उनके स्कूल में पढ़े हुए हैं, वे इस देश के गरीबों और कमजोर लोगों का दर्द दूर करते रहेंगे और नेता जी के नाम को जिन्दा रखेंगे, ऐसी मुझे उम्मीद है। और भी बहुत से मा0 सदस्य श्री प्रभाकर सिंह, श्री प्रभाकर शुक्ल, श्री दीनानाथ, श्री बृज-बल्लभ, श्री राधा कृष्ण अग्रवाल, श्री विष्णुस्वरूप, श्री विष्णु शरण दुब्लिश, श्री कमला सिंह यादव, श्री पारस नाथ सिंह, श्री राम हर्ष चौधरी, श्री जगदीश प्रसाद, श्री मोहम्मद महमूद अली खां तथा श्री सजीवन लाल यह भी हमारे बीच में नहीं रहे। वे इस माननीय सदन के सदस्य थे और जिन भावनाओं को इजहार माननीय नेता सदन ने और अन्य नेताओं ने किया है, उनसे मैं आपने को सम्बद्ध करता हूं और अपनी श्रद्धांजलि पेश करता हूं।

श्री अध्यक्ष–

श्री राजनारायण जी, श्री प्रभाकर सिंह जी, श्री प्रभाकर शुक्ल जी, श्री दीनानाथ जी, श्री बृज बल्लभ जी, श्री राधाकृष्ण अग्रवाल जी, श्री विष्णु स्वरूप जी, श्री विष्णु शरण दुब्लिश जी, श्री वशिष्ठ नारायण शर्मा जी, कमला सिंह यादव जी श्री पारस नाथ सिंह जी, श्री राम हर्ष चौधरी जी, श्री जगदीश प्रसाद, श्री मो0 महमूद अली खां और श्री सजीवन लाल जी, जैसी 15-15 हस्तियां हमारे बीच से उठ गयीं। राज नारायण जी मेरे नजरिये से निराली शख्सियत थे और संघर्ष तो उनकी मुठ्ठी में था। गरीबों के हमदर्द और उनकी बात को लेकर लड़ने वाले व्यक्ति थे, जो आज हमारे बीच से उठ गये और जो हमारे अन्य साथी नहीं रहे, उससे बड़ा दुख है। नेता सदन ने और अन्य नेताओं ने जो उनके प्रति अपने-अपने विचार रखे हैं, उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं और आप सभी से अनुरोध करता हूं कि उनको श्रद्धांजलि देने के लिये 2 मिनट के लिये मौन खड़े हों।

(सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर दो मिनट मौन खड़े हुए।)

श्री अध्यक्ष–

अब हम उठते हैं, कल 11 बजे फिर मिलेंगे।

(इसके बाद सदन अपराह्न 1 बजकर 9 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

भाल चन्द्र शुक्ल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ :
3 मार्च, 1987

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

पी. एस. यू. पी. एल. 322 एल. ए –(644)-1987–813।